समर्थ छात्र समर्थ राष्ट्र

हिंदी विवेक
WE WORK FOR A BETTER WORLD
Issue : 19 - 25 July 2026

50+ YEARS OF MOMENTUM
दि कल्याण जनता सहकारी बँक लि.
मल्टी-स्टेट शेड्युल्ड बँक
बदलत्या हवामानात स्वतःची काळजी घ्या... आणि कल्याण जनता बँकिंग ॲप द्वारे तुमची सर्व बँकिंग कामे करा - सुरक्षितपणे, सहज आणि घरबसल्या.
अर्थ सहकारेण कल्याणम्
TOLL FREE: 1800 233 1919
kalyanjanata.bank.in
KJSBank

अनुक्रमणिका

◆ छात्र शक्ति से राष्ट्र शक्ति तक की यात्रा	डॉ. संतोष झा	04
◆ राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस का आयोजन	प्रो. मंदार भानुशे	06
◆ अभाविप की अबतक की सशक्त यात्रा	सचिन तिवारी	08
◆ अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक सम्पन्न	संकलन	11
◆ नीट परीक्षा परिणाम के बाद नई बहस	डॉ. रामेश्वर मिश्र	12
◆ शीघ्र अंतर्ध्यान हुए बाबा बर्फानी	रितेश कश्यप	14
◆ सतलुज पर उठते बवाल	अतुल गंगवार	17
◆ वैश्विक अवसरों की नई उड़ान	उषा शर्मा 'प्रिया'	19
◆ भावनात्मक विकास भी आवश्यक	परिणीता सिन्हा	21
◆ फीफा वर्ल्ड कप फाइनल की प्रतीक्षा	राजीव रोहित	24
◆ चूड़ियों की खनखनाहट भी कुछ कहती हैं	स्निग्धा अवतंस	25
◆ सूर्योदय का अंजोर	संकलन	26
◆ इधर भी देखें	संकलन	28
◆ समाचार	-	29

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

पंजीयन शुल्क

वार्षिक मूल्य : 500 रुपये, त्रैवार्षिक मूल्य : 1200 रुपये
पंचवार्षिक मूल्य : 1800 रुपये, आजीवन मूल्य : 25,000 रुपये

कार्यालय : प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर-10, सेक्टर-2,
श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे, हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप,
कांदिवली (पश्चिम), मुंबई- 400067. सम्पर्क : 9594991884

छात्र शक्ति से राष्ट्र शक्ति तक की यात्रा

उद्देश्य

डॉ. संतोष झा

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना का अपना एक अलग उद्देश्य रहा है। जेनयू और दिल्ली विश्वविद्यालय के अपनी अलग वैचारिक परिवेश में एबीवीपी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता और भारतीय ज्ञान परम्परा को केंद्र में रखकर अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास किया।

भारत के लोकतांत्रिक विकास में छात्र शक्ति की सदैव महत्वपूर्ण भूमिका रही है। स्वतंत्रता आंदोलन से लेकर राष्ट्र निर्माण तक विद्यार्थियों ने परिवर्तन के वाहक के रूप में योगदान दिया है। इसी उद्देश्य से 9 जुलाई 1949 को अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (एबीवीपी) की स्थापना हुई। सात दशकों से अधिक की यात्रा में एबीवीपी स्वयं को राष्ट्रहित, शिक्षा, नेतृत्व निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व के लिए समर्पित छात्र आंदोलन के रूप में स्थापित करने का प्रयास करती रही है।

स्वतंत्रता के बाद भारत के समक्ष लोकतांत्रिक मूल्यों, राष्ट्रीय एकता और सामाजिक उत्तरदायित्व से युक्त नागरिकों के निर्माण की चुनौती थी। इसी दृष्टि से विश्वविद्यालयों को भावी नेतृत्व की प्रयोगशाला माना गया। एबीवीपी ने शिक्षा को केवल रोजगार का माध्यम नहीं बल्कि चरित्र निर्माण, नेतृत्व विकास और राष्ट्र निर्माण का प्रभावी साधन मानकर अपने कार्य का आधार बनाया।

एबीवीपी का ध्येय वाक्य ज्ञान, शील और एकता उसकी कार्यदृष्टि का आधार है। ज्ञान बौद्धिक विकास, शील नैतिक चरित्र और एकता राष्ट्र के प्रति उत्तरदायित्व की भावना विकसित करती है। इसी सोच के साथ परिषद छात्र राजनीति को चुनाव तक सीमित न रखकर सेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व, शिक्षा सुधार, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान और आपदा राहत जैसे रचनात्मक कार्यों को प्राथमिकता देती है।

एबीवीपी का स्थापना दिवस केवल इतिहास का स्मरण नहीं बल्कि आत्ममंथन और नए संकल्प का अवसर है। यह विद्यार्थियों में राष्ट्रसेवा, सामाजिक उत्तरदायित्व, शिक्षा की गुणवत्ता और चरित्र निर्माण की भावना जागृत करते हुए छात्र जीवन को राष्ट्रनिर्माण से जोड़ने का संदेश देता है।

यदि भारतीय विश्वविद्यालयों की छात्र राजनीति की चर्चा की जाए तो दिल्ली विश्वविद्यालय और जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय (जेएनयू) का उल्लेख स्वाभाविक है। दोनों संस्थान लम्बे समय से वैचारिक चर्चा व संघर्ष, छात्र नेतृत्व और लोकतांत्रिक

राजनीति के प्रमुख केंद्र रहे हैं। विशेष रूप से जेएनयू में वामपंथी छात्र संगठनों का ऐतिहासिक प्रभाव रहा है, जबकि दिल्ली विश्वविद्यालय में विभिन्न विचारधाराओं के बीच निरंतर लोकतांत्रिक प्रतिस्पर्धा देखने को मिलती रही हैं। ऐसे वैचारिक परिवेश में एबीवीपी ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, राष्ट्रीय एकता और भारतीय ज्ञान परम्परा को केंद्र में रखकर अपनी अलग पहचान बनाने का प्रयास किया। जेएनयू में परिषद ने वर्षों से राष्ट्रवाद, शिक्षा सुधार, भारतीय भाषाओं, संस्कृति और राष्ट्रीय मुद्दों पर सक्रिय अभियान चलाए हैं। यद्यपि छात्रसंघ चुनावों में उसे अभी तक अपेक्षित सफलता नहीं मिली है, फिर भी संगठनात्मक विस्तार और वैचारिक उपस्थिति पहले की तुलना में अधिक मजबूत हुई है। दूसरी ओर दिल्ली विश्वविद्यालय में एबीवीपी लम्बे समय से छात्रसंघ चुनावों में उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करती रही है, जिससे वह छात्र राजनीति का एक प्रभावशाली संगठन बनी हुई है।

वैचारिक स्तर पर एबीवीपी और वामपंथी छात्र संगठनों के दृष्टिकोण में स्पष्ट अंतर दिखाई देता हैं। वामपंथी विचारधारा सामान्यतः वर्ग संघर्ष, सामाजिक एवं आर्थिक समानता, जातीय और लैंगिक न्याय तथा समाजवादी दृष्टिकोण पर बल देती है। इसके विपरीत एबीवीपी राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक अस्मिता, भारतीय ज्ञान परम्परा और सभ्यतागत मूल्यों को शिक्षा छात्र जीवन का अभिन्न अंग मानती है। इसी कारण इतिहास, राष्ट्रवाद, शिक्षा नीति, भाषा, संस्कृति और राष्ट्रीय सुरक्षा जैसे विषयों पर दोनों पक्षों के बीच समय-समय पर वैचारिक बहस होती रही है।

हालांकि विश्वविद्यालय लोकतांत्रिक विमर्श के मंच हैं, जहां विभिन्न विचारधाराओं का सह-अस्तित्व लोकतंत्र की शक्ति माना जाता है। इसलिए वैचारिक मतभेदों को संवाद, तर्क और संवैधानिक मर्यादाओं के भीतर ही व्यक्त किया जाना चाहिए। स्वस्थ छात्र राजनीति वही है, जो असहमति का सम्मान करते हुए शैक्षणिक वातावरण, लोकतांत्रिक मूल्यों और राष्ट्रहित को समान रूप से महत्व दे।

एबीवीपी की विशेषता यह रही है कि उसने स्वयं को केवल वैचारिक बहस तक सीमित नहीं रखा बल्कि शिक्षा और समाज से जुड़े अनेक रचनात्मक विषयों पर सक्रिय भूमिका निभाई हैं। नई शिक्षा नीति, मातृभाषा में शिक्षा, भारतीय ज्ञान परम्परा, कौशल विकास, स्टार्टअप संस्कृति, नवाचार और डिजिटल शिक्षा जैसे विषयों पर परिषद निरंतर संवाद और जनजागरण करती रही हैं। परिषद का मानना है कि भारत यदि वैश्विक नेतृत्व की भूमिका निभाना चाहता है तो उसकी शिक्षा व्यवस्था आधुनिक विज्ञान एवं तकनीक के साथ-साथ भारतीय ज्ञान, दर्शन और सांस्कृतिक विरासत से भी प्रेरणा ले। इसी दृष्टि से योग, आयुर्वेद, भारतीय दर्शन, स्थानीय भाषाओं तथा सांस्कृतिक मूल्यों को शिक्षा के साथ जोड़ने पर विशेष बल दिया जाता है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई), डिजिटल अर्थव्यवस्था और तीव्र वैश्विक प्रतिस्पर्धा के इस दौर में विश्वविद्यालयों की भूमिका और अधिक महत्वपूर्ण हो गई है। आज शिक्षा का उद्देश्य केवल रोजगार उपलब्ध कराना नहीं बल्कि ऐसे युवाओं का निर्माण करना है जो बौद्धिक रूप से सक्षम, नैतिक रूप से दृढ़ और सामाजिक रूप से उत्तरदायी हों। एबीवीपी का मानना है कि छात्र जीवन में नेतृत्व, सेवा और राष्ट्रहित की भावना का विकास ही भविष्य के सशक्त भारत की आधारशिला है।

लोकतांत्रिक व्यवस्था में किसी भी बड़े छात्र संगठन की तरह एबीवीपी भी समय-समय पर आलोचनाओं और वैचारिक मतभेदों का सामना करती रही है। किसी भी संगठन का मूल्यांकन उसके दीर्घकालिक योगदान, संगठनात्मक विस्तार, शिक्षा सुधार, सामाजिक सरोकारों और राष्ट्रहित में किए गए कार्यों के आधार पर होना चाहिए।

सात दशकों से अधिक की यात्रा में एबीवीपी ने छात्र राजनीति को राष्ट्रीय विमर्श, सामाजिक उत्तरदायित्व और नेतृत्व निर्माण से जोड़ने का प्रयास किया है। आज विकसित भारत के निर्माण में युवाओं की भूमिका पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। एबीवीपी का स्थापना दिवस इसी विश्वास को सुदृढ़ करता है कि 'छात्र शक्ति ही राष्ट्र शक्ति' है। ज्ञान, चरित्र, सेवा और राष्ट्रनिष्ठा से युक्त युवा ही आत्मनिर्भर, विकसित और सांस्कृतिक रूप से सशक्त भारत के निर्माण के सच्चे आधार बन सकते हैं।

राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस का आयोजन

स्थापना दिवस

प्रो. मंदार भानुशे

अभाविप के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर विशेषकर मुम्बई के महाविद्यालयों में कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। जिसमें विद्यार्थियों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 78वें स्थापना दिवस के अवसर पर विगत गुरुवार को मुम्बई महानगर के 100 से अधिक महाविद्यालयों में राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस विभिन्न कार्यक्रमों के माध्यम से उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस अवसर पर विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में सहभागिता देखने को मिली।

कार्यक्रमों में एम.डी. महाविद्यालय (परळ), रुइया महाविद्यालय, पोतद-ार महाविद्यालय, रूपारेल महाविद्यालय, कीर्ति महाविद्यालय, पोतदार आयुर्वेदिक महाविद्यालय (दादर), सायन आयुर्वेदिक महाविद्यालय, एस.आई.एस. महाविद्यालय (सायन), झुनझुनवाला महाविद्यालय (घाटकोपर), सोमैया महाविद्यालय (विद्याविहार), विवेकानंद महाविद्यालय (चेम्बूर), एम.सी.सी. महाविद्यालय एवं वझे-केळकर महाविद्यालय (मुलुंड), चेतना महाविद्यालय (बांद्रा पश्चिम एवं सांताक्रूज), ठाकुर महाविद्यालय (कांदिवली), मिठीबाई महाविद्यालय, साठे-डहाणू महाविद्यालय (विलेपार्ले), एस.एन. महाविद्यालय (मीरा-भाईंदर) तथा मुंबई विश्वविद्यालय के कलिना परिसर के विभिन्न विभागों सहित अनेक शिक्षण संस्थानों ने भाग लिया। विदित हो कि अभाविप पिछले 77 वर्षों से अपने ध्येय वाक्य ज्ञान, शील, एकता के अनुरूप छात्रहित, राष्ट्र निर्माण और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करने के लिए कार्य कर रही है। स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में विभिन्न महाविद्यालयों में 'आज का विद्यार्थी- आज का नागरिक' विषय पर व्याख्यान आयोजित किए गए, जिनमें विद्यार्थियों को राष्ट्र निर्माण में उनकी भूमिका के प्रति जागरूक किया गया।

इस अवसर पर आवश्यकतामंद विद्यार्थियों को शैक्षणिक सामग्री एवं आवश्यक वस्तुओं का वितरण किया गया। साथ ही विद्यार्थियों को बुकमार्क और चॉकलेट वितरित किए गए, महाविद्यालयों के बाहर नामफलक का अनावरण किया गया तथा ढोल-ताशों की गूंज के बीच विद्यार्थियों का स्वागत किया गया। सभी

कार्यक्रमों में विद्यार्थियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

अभाविप के अनुसार मुम्बई महानगर के 100 से अधिक महाविद्यालयों में राष्ट्रीय विद्यार्थी दिवस के कार्यक्रम सफलतापूर्वक सम्पन्न हुए। आगामी 8 दिवस तक विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, नेतृत्व क्षमता, सामाजिक उत्तरदायित्व और राष्ट्रभावना को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से विभिन्न छात्र-केंद्रित कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। परिषद ने कहा कि विद्यार्थियों के हितों और उनकी समस्याओं को लेकर आगे भी निरंतर कार्य जारी रहेगा।

कुछ तिथियां केवल कैलेंडर का हिस्सा नहीं होतीं, वे इतिहास की धड़कन बन जाती हैं। 9 जुलाई ऐसी ही एक तिथि है। यह केवल एक संगठन का स्थापना दिवस नहीं बल्कि उस विचारधारा का उत्सव है जिसने भारतीय छात्र को कक्षा की चारदीवारी से निकालकर समाज और राष्ट्र के व्यापक दायित्वों से जोड़ा।

जब कोई छात्र महाविद्यालय की चौखट पर कदम रखता है तो उसके मन में अनेक सपने होते हैं, अच्छी शिक्षा, सफल करियर, सम्मानजनक जीवन। स्वतंत्रता आंदोलन में सहभागी युवाशक्ति स्वतंत्र भारत के पुनर्निर्माण में कैसे योगदान दे सकती हैं, इस विचार को केंद्र में रखकर अभाविप की स्थापना हुई। उस दिन बोया गया विचार का छोटा-सा बीज आज 78 वर्षों की ध्येय यात्रा तय कर एक विशाल वटवृक्ष बन चुका है। पीढ़ियां बदलती रहीं, परिस्थितियां बदलती रहीं, चुनौतियां बदलती रहीं, लेकिन परिषद का मूल विश्वास नहीं बदला। परिषद का विचार था कि राष्ट्र केवल संसद में नहीं बनता उसका निर्माण विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों और विद्यालयों में भी होता है। परिषद मानती है कि छात्र पूरे राष्ट्र और समाज का एक एकात्म घटक हैं और सम्पूर्ण हित में उसका हित समाहित है। जिस देश के छात्र जागरूक होंगे, वही देश आत्मविश्वासी और समर्थ बनेगा। यही कारण है कि परिषद ने कभी छात्र को केवल भविष्य का नागरिक नहीं माना। उसने कहा- वह आज भी समाज का उतना ही उत्तरदायी अंग है। राष्ट्रीय जीवन के अंतर्गत सभी परिवर्तनों में उसकी सहभागिता की अग्र भूमिका अपेक्षित हैं। यही सोच आगे चलकर परिषद की सम्पूर्ण ध्येय यात्रा का आधार बनी। परिषद ने विश्वविद्यालयों में शैक्षणिक वातावरण, परीक्षा सुधार, छात्रावास, छात्राओं की सुरक्षा (मिशन साहसी), सामाजिक समरसता, पर्यावरण, अनुसंधान (शोध आयाम), खेल, नवाचार और राष्ट्रीय एकता जैसे अनेक विषयों पर निरंतर कार्य किया। संघर्ष और रचनात्मकता का यह संतुलन ही परिषद की विशिष्ट पहचान बन गया।

अभाविप की सैद्धांतिक भूमिका भारतीय संस्कृति के एकात्म जीवन दर्शन से प्रेरित है। जिस प्रकार मनुष्य शरीर, मन, बुद्धि और आत्मा का समन्वित रूप हैं, उसी प्रकार परिषद के लिए छात्र उसका शरीर है, संगठन उसका मन है, कार्यपद्धति उसकी बुद्धि है और राष्ट्रनिष्ठ विचार उसकी आत्मा हैं। कदाचित् यही कारण है कि 77 वर्ष पूरे करने के बाद भी परिषद स्वयं को युवा अनुभव करती है।

किसी भी संगठन की उपलब्धियां उसके स्मारकों में नहीं, उसके कार्यकर्ताओं के जीवन में दिखाई देती हैं। 77 वर्षों में लाखों छात्रों ने परिषद के माध्यम से समाज को समझा, नेतृत्व सीखा, सेवा का संस्कार पाया और अपने जीवन को केवल व्यक्तिगत सफलता तक सीमित न रखकर राष्ट्रहित से जोड़ा और यही परिषद की सबसे बड़ी उपलब्धि है। आज जब हम

विकसित भारत-2047 का स्वप्न देख रहे हैं, तब यह स्वप्न केवल नीतियों से पूरा नहीं होगा। यह तब साकार होगा जब देश का छात्र अपने भीतर छिपी उस शक्ति को पहचान लेगा जो विचार को कर्म में, सेवा को नेतृत्व में और स्वप्न को राष्ट्रीय संकल्प में बदल देती हैं। हरेक छात्र को हनुमान जी की भूमिका में आना है- जब आवश्यकता हो तो सूक्ष्म रूप में, जब-जहां आवश्यकता हो तब विराट रूप में!

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की यह 77 वर्षों की यात्रा हमें यही विश्वास देती है कि राष्ट्र का परिसरों में बनता है; युवाओं के चरित्र में गढ़ा जाता है। इसीलिए 9 जुलाई केवल एक स्थापना दिवस नहीं है। यह उस अनवरत विश्वास का उत्सव है कि जब छात्र जागता है, तब राष्ट्र आगे बढ़ता हैं, जब छात्र संगठित होता है, तब समाज बदलता हैं और जब छात्र अपने जीवन को राष्ट्र के लिए समर्पित करता है, तभी छात्रशक्ति वास्तव में राष्ट्रशक्ति बन जाती हैं। ●●●

सचिन तिवारी

अभाविप की अबतक की सशक्त यात्रा

अभाविप युवाओं को केवल डिग्री प्राप्त करने वाला छात्र नहीं बल्कि नेतृत्वक्षम, सामाजिक रूप से उत्तरदायी, सांस्कृतिक रूप से जागरूक और राष्ट्रहित के प्रति संवेदनशील नागरिक बनाने का प्रयास करती है।

9 जुलाई भारतीय छात्र आंदोलन के इतिहास में एक महत्वपूर्ण तिथि है। इसी दिन वर्ष 1949 में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद की स्थापना हुई। स्वतंत्र भारत के निर्माण में युवाओं की सक्रिय भूमिका सुनिश्चित करने तथा छात्र शक्ति को राष्ट्र निर्माण की दिशा में संगठित करने के उद्देश्य से प्रारम्भ हुआ यह संगठन आज विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन माना जाता है। इसका ध्येय वाक्य 'ज्ञान, शील और एकता' तथा उद्घोष 'छात्र शक्ति-राष्ट्र शक्ति' केवल नारे नहीं बल्कि संगठन के वैचारिक दर्शन और कार्यपद्धति का आधार हैं। अपनी स्थापना के सात दशक से अधिक समय में अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद ने केवल छात्र राजनीति तक स्वयं को सीमित नहीं रखा बल्कि शिक्षा, सामाजिक उत्तरदायित्व, राष्ट्रीय एकता, आपदा सेवा, पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिकरण, जनजातीय विकास, कौशल विकास तथा सांस्कृतिक पुनर्जागरण जैसे अनेक क्षेत्रों में व्यापक छात्र-उन्मुख कार्य किए हैं।

अभाविप का सबसे बड़ा योगदान रहा है कि उसने छात्र को केवल परीक्षा देने वाला व्यक्ति नहीं माना बल्कि समाज परिवर्तन का सक्रिय सहभागी माना। संगठन ने समय-समय पर अनेक ऐसे अभियान चलाए, जिनका सीधा सम्बंध विद्यार्थियों के हितों से रहा है। देशभर के विश्वविद्यालयों में छात्रावासों की कमी, पुस्तकालयों के आधुनिकीकरण, छात्रवृत्तियों में वृद्धि, परीक्षा प्रणाली में पारदर्शिता, शोध सुविधाओं के विस्तार, नई शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन, रोजगारोन्मुख शिक्षा तथा कौशल विकास जैसे विषयों पर परिषद लगातार आंदोलन और संवाद करती रही हैं। अभाविप ने स्टूडेंट्स एक्सपीरियंस इन इंटरस्टेट लिविंग जैसे कार्यक्रमों के माध्यम से उत्तर-पूर्व और शेष भारत के विद्यार्थियों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया। इस कार्यक्रम ने हजारों विद्यार्थियों को भारत की विविधता को निकट से

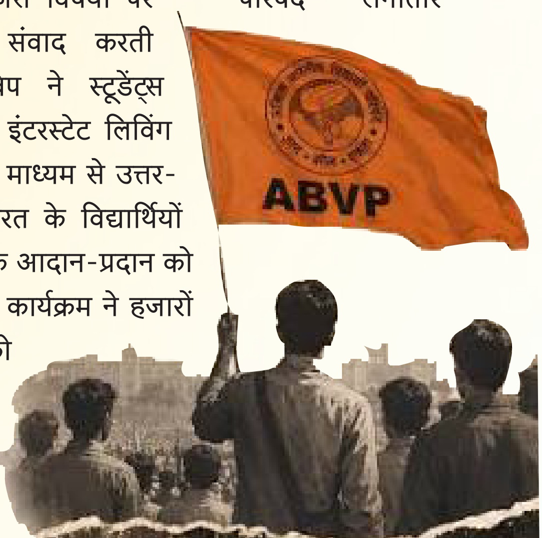

समझने का अवसर प्रदान किया। इसके अतिरिक्त परिषद ने थिंक इंडिया जैसे बौद्धिक मंचों के माध्यम से उच्च शिक्षण संस्थानों में शोध, नवाचार, सार्वजनिक नीति, स्टार्टअप संस्कृति तथा भारतीय ज्ञान परम्परा पर विमर्श को प्रोत्साहित किया। महिला विद्यार्थियों की सुरक्षा, परिसर में लैंगिक समानता, साइबर सुरक्षा जागरूकता तथा आत्मरक्षा प्रशिक्षण जैसे अभियानों में भी संगठन ने उल्लेखनीय सक्रियता दिखाई है। प्राकृतिक आपदाओं, महामारी तथा संकट के समय परिषद के कार्यकर्ताओं ने सेवा कार्यों में उल्लेखनीय योगदान दिया। कोविड-19 महामारी के दौरान देश के विभिन्न राज्यों में विद्यार्थियों और आवश्यकतामंद परिवारों तक भोजन, दवाइयां, रक्तदान, प्लाज्मा दान, ऑनलाइन परामर्श तथा राहत सामग्री पहुंचाने का कार्य परिषद के स्वयंसेवकों द्वारा किया गया। इसी प्रकार बाढ़, भूकम्प तथा अन्य प्राकृतिक आपदाओं के समय भी संगठन की सेवा गतिविधियां व्यापक रूप से दिखाई दीं।

यदि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) का मूल्यांकन किया जाए तो यह स्पष्ट होता है कि अपने स्थापना काल (1949) से लेकर आज तक परिषद ने भारतीय छात्र आंदोलन को केवल मांग-आधारित राजनीति तक सीमित न रखकर राष्ट्र निर्माण से जोड़ने का प्रयास किया है। परिषद का ध्येय वाक्य 'ज्ञान, शील और एकता' इसी व्यापक दृष्टि को अभिव्यक्त करता है। आज देश के लगभग प्रत्येक राज्य, अधिकांश विश्वविद्यालयों तथा हजारों महाविद्यालयों में इसकी सक्रिय इकाइयां कार्यरत हैं। सदस्यता और संगठनात्मक विस्तार की दृष्टि से यह विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठनों में गिना जाता हैं।

परिषद की सबसे बड़ी उपलब्धि उसका नेतृत्व निर्माण का मॉडल है। पिछले सात दशकों में परिषद ने ऐसे हजारों युवाओं को सार्वजनिक जीवन के लिए तैयार किया, जिन्होंने आगे चलकर विभिन्न क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। परिषद से जुड़े अनेक कार्यकर्ता बाद में विश्वविद्यालयों में शिक्षक, वैज्ञानिक, प्रशासनिक अधिकारी, न्यायविद, पत्रकार, उद्यमी, सामाजिक कार्यकर्ता, सांसद, विधायक तथा मंत्री बने।

अभाविप ने समय-समय पर शिक्षा शुल्क वृद्धि, छात्रवृत्ति, परीक्षा व्यवस्था, विश्वविद्यालयों की अव्यवस्थाओं, छात्रावास, पुस्तकालय, महिला सुरक्षा, रोजगार, प्रतियोगी परीक्षाओं में पारदर्शिता तथा शिक्षा की गुणवत्ता जैसे अनेक विषयों पर आंदोलन किए हैं। आपातकाल (1975-77) के दौरान लोकतांत्रिक अधिकारों की रक्षा के लिए परिषद के अनेक कार्यकर्ताओं ने जेल यात्राएं कीं। इस कारण परिषद स्वयं को लोकतांत्रिक छात्र आंदोलनों की एक महत्वपूर्ण धारा के रूप में प्रस्तुत करती है।

अभाविप ने भारतीय ज्ञान परम्परा, भारतीय भाषाओं, सांस्कृतिक विरासत, शिक्षा के भारतीयकरण, अनुसंधान, नवाचार तथा आत्मनिर्भर भारत जैसे विषयों को लम्बे समय तक छात्र विमर्श का हिस्सा बनाए रखा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 में भारतीय भाषाओं, मातृभाषा आधारित शिक्षा, भारतीय ज्ञान प्रणाली, कौशल विकास, बहुविषयक शिक्षा तथा अनुसंधान पर दिया गया बल उन विषयों से मेल खाता है, जिनकी चर्चा परिषद वर्षों से करती रही थी। इससे यह कहा जा सकता है कि परिषद के अनेक विचार राष्ट्रीय शिक्षा विमर्श का हिस्सा बने।

आज का युवा केवल राजनीतिक नारों से प्रभावित नहीं होता। वह ऐसे मंच की खोज करता है जहां उसे नेतृत्व, व्यक्तित्व विकास, सामाजिक सेवा, नेटवर्किंग, बौद्धिक विकास तथा राष्ट्र निर्माण में योगदान का अवसर मिले। अभाविप अपने विभिन्न प्रकल्पों के माध्यम से इन क्षेत्रों में अनेक अवसर उपलब्ध कराती है। अभाविप आज भी देश के अनेक विश्वविद्यालयों और महाविद्यालयों में केवल एक छात्र संगठन के रूप में नहीं बल्कि विविध रचनात्मक गतिविधियों के माध्यम से युवाओं को जोड़ने वाले व्यापक छात्र आंदोलन के रूप में अपनी उपस्थिति बनाए हुए हैं। ●●●

राष्ट्रीय भावनाओं को जाग्रत करनेवाली
सामाजिक व पारिवारिक पत्रिका

हिंदी विवेक
We Work For Better World

पंजीयन करें

सेवा विवेक ग्रंथ

मौलिक एवं संग्रहणीय ग्रंथ, स्वयं एवं परिजनों के लिए पंजीयन करें

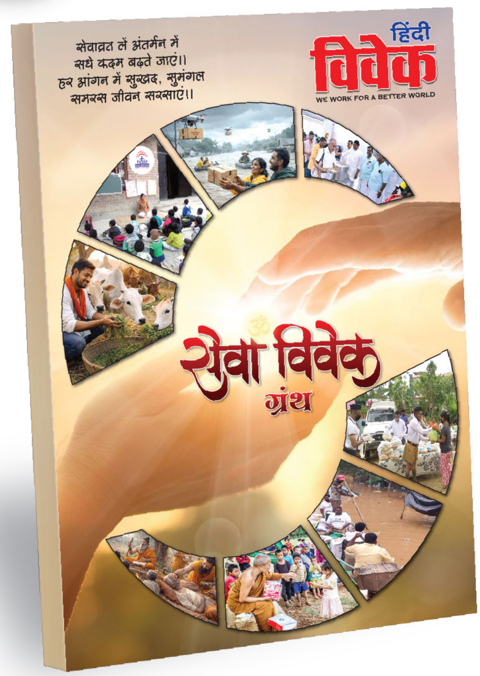

प्रकाशन पूर्व मूल्य
600/-

ग्रंथ का मूल्य
₹ 700/-

ग्रंथ प्रकाशन का उद्देश्य

भारत की आत्मा ...सेवा। जो केवल सहायता या दान नहीं है।

सेवा का सही अर्थ है कर्तव्य, संवेदना और सामाजिक उत्तरदायित्व का समन्वय।

सेवा को भावनात्मक कार्य से आगे ले जाकर विचारशील, सामाजिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत करना।

सेवा के पीछे की भारतीय दृष्टि, प्रेरणा और दर्शन को उजागर करना।

इस विचार को बल देना कि सेवा व्यक्ति को संस्कारित कर समाज को संगठित एवं सशक्त करने का प्रभावी माध्यम है।

आदर्श सेवा कार्यों को संकलित कर समाज के प्रबुद्ध पाठकों के सम्मुख प्रस्तुत करना।

देश के गणमान्य विशेषज्ञों एवं लेखकों की कलम से समृद्ध विषय वस्तु से परिपूर्ण ग्रंथ

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ऑनलाइन पेमेंट करने के बाद कृपया 9594991884 पर कॉल करके सूचित करें या व्हाट्सअप करें।

Draft or Cheque should be drawn in the name of : HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank : State Bank of India
Branch : Charkop
A/C No. : 43884034193
IFSC : SBIN0011694

स्थानीय प्रतिनिधि से सम्पर्क करें
कार्यालय : सहारा नांगरे - 9594991884
Email : hindivivekvargani@gmail.com

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ

अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक सम्पन्न

बेलगावी, कर्नाटक। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की वार्षिक अखिल भारतीय प्रांत प्रचारक बैठक विगत 12 जुलाई को कर्नाटक के बेलगावी में सम्पन्न हो गई। इस बैठक में पू. सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत जी, मा. सरकार्यवाह दत्तात्रेय होसबाले जी सहित 226 कार्यकर्ता उपस्थित थे।

बैठक में मार्च 2026 के बाद संघ के विभिन्न स्तरों पर सम्पन्न हुए प्रशिक्षण वर्गों की समीक्षा की गई। इस वर्ष देशभर में कुल 83 संघ शिक्षा वर्ग और 12 कार्यकर्ता विकास वर्ग सम्पन्न हुए, जिसमें कुल 18842 स्वयंसेवकों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया, जिसमें शाखा संचालन, संघ कार्यपद्धति, ग्राम विकास, कुटुम्ब प्रबोधन, आपदा प्रबंधन, पर्यावरण जैसे विषय सम्मिलित थे।

शाखाओं के स्तर पर कार्ययोजना के क्रियान्वयन की दृष्टि से विस्तार से चर्चा की गई और सितम्बर मास में अधिकतम शाखा विस्तार योजना पर भी चर्चा की गई। साथ में शताब्दी वर्ष के सम्पन्न हुए कार्यक्रमों की समीक्षा तथा निर्धारित शेष कार्यक्रमों की योजना पर भी विचार किया गया। शताब्दी वर्ष के विविध कार्यक्रमों में सम्पर्क में आए लोगों को सामाजिक कार्यों और पंच परिवर्तन के विषयों में सक्रिय करने की योजना पर विचार हुआ। पू. सरसंघचालक जी की वर्ष 2026-27 की प्रवास योजना पर भी चर्चा की गई।

बैठक में वर्तमान परिदृश्य के विभिन्न विषयों पर चर्चा हुई, जिसमें मुख्य रूप से जनगणना के संदर्भ में जानकारी और जनसांख्यिकी असंतुलन से उत्पन्न चुनौतियां आदि विषय शामिल रहे। ड्रग्स के बढ़ते दुष्प्रभाव पर चिंता के साथ ही नशा मुक्ति के लिए प्राथमिकता से प्रयासों की आवश्यकता तथा संत शिरोमणि रविदास महाराज जी के 650 वें जन्म जयंती वर्ष के कार्यक्रमों की योजना पर भी चर्चा हुई।

बैठक में सभी ने श्री रामजन्मभूमि मंदिर में दानपेटी चढ़ावे की गिनती में हुई अनियमितता की घटना पर दु:ख व्यक्त किया तथा तीर्थक्षेत्र न्यास के निवेदन पर चल रही एसआईटी एवं पुलिस कार्रवाई निर्णायक मोड़ पर पहुंचेगी, यह विश्वास व्यक्त किया। तीर्थक्षेत्र न्यास से यह अपेक्षा की गई कि वह यह सुनिश्चित करे कि भविष्य में ऐसी कोई घटना न हो, जिससे समस्त राम भक्तों की राम मंदिर के प्रति श्रद्धा और गहरी आस्था पर आघात हो। यह जानकारी संघ के अखिल भारतीय प्रचार प्रमुख सुनील आम्बेकर ने प्रेस विज्ञप्ति जारी कर दी।

शिक्षा

डॉ. रामेश्वर मिश्र

परीक्षा व्यवस्था को राजनीतिक आरोप-प्रत्यारोप से ऊपर उठाकर संस्थागत रूप से इतना मजबूत बनाया जाए कि भविष्य में किसी भी प्रकार की अनियमितता की भावना न्यूनतम रह जाए।

देश की सबसे प्रतिष्ठित और प्रतिस्पर्धी प्रवेश परीक्षाओं में से एक राष्ट्रीय पात्रता सह प्रवेश परीक्षा नीट केवल एक परीक्षा नहीं बल्कि लाखों विद्यार्थियों के चिकित्सा शिक्षा के सपनों का आधार हैं। यही कारण है कि इस परीक्षा की निष्पक्षता, पारदर्शिता और विश्वसनीयता पर देशभर की दृष्टि रहती हैं। विगत माह नीट परीक्षा के दौरान प्रश्नपत्र लीक होने और परीक्षा प्रक्रिया में अनियमितताओं के आरोपों ने न केवल अभ्यर्थियों और अभिभावकों की चिंता बढ़ाई बल्कि देश की राजनीति में भी व्यापक बहस को जन्म दिया। विपक्षी दलों ने इस मुद्दे को गम्भीरता से उठाते हुए केंद्र सरकार और तत्कालीन शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान से नैतिक जिम्मेदारी स्वीकार करते हुए त्यागपत्र की मांग की। दूसरी ओर सरकार ने आश्वस्त किया कि दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी तथा भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए व्यापक सुधार किए जाएंगे।

नीट प्रश्नपत्र लीक प्रकरण ने यह स्पष्ट कर दिया कि देश की सबसे महत्वपूर्ण परीक्षाओं में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक मजबूत बनाने की आवश्यकता हैं। इस घटना के बाद सरकार ने परीक्षा प्रणाली की समीक्षा की तथा अनेक स्तरों पर सुधारात्मक कदम उठाए। परीक्षा केंद्रों की सुरक्षा बढ़ाई गई, अभ्यर्थियों के सत्यापन की प्रक्रिया को अधिक कठोर बनाया गया, डिजिटल निगरानी को मजबूत किया गया तथा विभिन्न केंद्रीय और राज्य एजेंसियों के बीच बेहतर समन्वय स्थापित किया गया। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार परीक्षा सामग्री के सुरक्षित परिवहन और वितरण सहित सम्पूर्ण प्रक्रिया पर विशेष निगरानी रखी गई तथा सुरक्षा व्यवस्था को अभूतपूर्व स्तर तक मजबूत किया गया।

सरकार ने यह संदेश देने का प्रयास किया कि परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता सर्वोच्च प्राथमिकता है। इसी उद्देश्य से परीक्षा आयोजन के दौरान बहुस्तरीय सुरक्षा व्यवस्था अपनाई गई। विभिन्न सुरक्षा एजेंसियों के सहयोग से संवेदनशील क्षेत्रों पर विशेष निगरानी रखी गई ताकि किसी भी प्रकार की अनियमितता की सम्भावना को न्यूनतम किया जा सके। इस प्रक्रिया का उद्देश्य विद्यार्थियों और अभिभावकों का विश्वास पुनः स्थापित करना था क्योंकि किसी भी राष्ट्रीय परीक्षा की सफलता केवल उसके आयोजन में नहीं बल्कि उस पर समाज के विश्वास में निहित होती है।

इसके बाद जब नीट परीक्षा सफलतापूर्वक सम्पन्न हुई और 16 जुलाई को परीक्षा परिणाम

नीट परीक्षा परिणाम के बाद नई बहस

घोषित किए गए, तब स्वाभाविक रूप से सार्वजनिक विमर्श का केंद्र बदल गया। अब चर्चा इस बात पर होने लगी कि यदि सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत करते हुए परीक्षा का आयोजन किया और परिणाम भी समय पर घोषित कर दिए तो क्या पहले लगाए गए आरोपों का राजनीतिक प्रभाव पहले जैसा बना रह सकता है? यह प्रश्न लोकतांत्रिक राजनीति में विचारणीय है।

लोकतंत्र में विपक्ष की भूमिका सरकार की नीतियों और कार्यप्रणाली पर प्रश्न उठाने तथा जवाबदेही सुनिश्चित करने की होती है। यदि किसी परीक्षा में गम्भीर अनियमितता के आरोप सामने आते हैं तो विपक्ष का सरकार से स्पष्टीकरण मांगना लोकतांत्रिक व्यवस्था का स्वाभाविक हिस्सा है। इसी प्रकार सरकार की जिम्मेदारी होती है कि वह तथ्यों के आधार पर उचित कार्रवाई करे, दोषियों को दंडित करे तथा परीक्षा व्यवस्था में आवश्यक सुधार लागू करे। इसलिए किसी भी विवाद का मूल्यांकन केवल राजनीतिक दृष्टि से नहीं बल्कि उसके समाधान के आधार पर भी किया जाना चाहिए।

नीट विवाद के दौरान अनेक विपक्षी नेताओं, सामाजिक कार्यकर्ताओं तथा विभिन्न संगठनों ने परीक्षा प्रणाली की विश्वसनीयता पर प्रश्न उठाए और निष्पक्ष जांच की मांग की। सार्वजनिक जीवन में सक्रिय विभिन्न व्यक्तियों ने भी परीक्षा में पारदर्शिता सुनिश्चित करने तथा दोषियों के विरुद्ध कठोर कार्रवाई की आवश्यकता पर अपने विचार व्यक्त किए। लोकतंत्र में नागरिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं और जनप्रतिनिधियों को अपनी चिंताएं व्यक्त करने का अधिकार है। वहीं यदि सरकार बाद में सुधारात्मक कदम उठाती है और परीक्षा प्रक्रिया को अधिक सुरक्षित एवं पारदर्शी बनाती है तो उस पर भी समान रूप से निष्पक्ष मूल्यांकन होना चाहिए।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि किसी परीक्षा के सफल आयोजन का अर्थ यह नहीं है कि पहले हुई अनियमितताओं से जुड़े सभी प्रश्न स्वतः समाप्त हो जाते हैं। यदि किसी मामले में जांच चल रही है या न्यायालय के समक्ष विचाराधीन है तो उसका निष्कर्ष सम्बंधित जांच एजेंसियों और न्यायिक प्रक्रिया के आधार पर ही निकलेगा। साथ ही यदि सरकार ने सुरक्षा व्यवस्था को मजबूत किया है और भविष्य में ऐसी घटनाओं की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाए हैं तो यह सकारात्मक पहल मानी जानी चाहिए। लोकतंत्र में आलोचना और उपलब्धि दोनों का मूल्यांकन तथ्यों के आधार पर होना ही चाहिए।

●●●

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ को समझने के लिए मौलिक एवं संग्रहणीय पुस्तक

हिंदी विवेक
" We Work For A Better World"

पद्मश्री रमेश पतंगे लिखित
'हिंदी विवेक' द्वारा प्रकाशित

हम संघ में क्यों हैं...

संघ विचारों की मूल प्रेरणा, संघकार्य को समझने की प्रक्रिया और इन सभी से संघ स्वयंसेवकों को अनायास मिलनेवाले राष्ट्रबोध और कर्तव्यबोध का वर्णन इस पुस्तक में किया गया है।

पंजीयन करें

पुस्तक का मूल्य ₹250/-

Draft or Cheque should be drawn in the name of **HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK**

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कॅन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483, भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

जलवायु परिवर्तन का दुष्परिणाम बाबा बर्फानी पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देने लगा है। वैज्ञानिक व प्राकृतिक दृष्टि से अमरनाथ धाम की शीतलता व शांति बनाए रखने हेतु अतिरिक्त उपायों की आवश्यकता हैं।

रितेश कश्यप

शीघ्र अंतर्ध्यान हुए बाबा बर्फानी

अमरनाथ की पवित्र गुफा में जब भक्त बाबा बर्फानी के दर्शन को पहुंचते हैं तो उनके हृदय में केवल श्रद्धा नहीं होती एक अकथनीय शांति होती है। ऐसा लगता है जैसे शिव स्वयं हिम-रूप में विराजमान हों भक्तों को अभयदान दे रहे हों। पौराणिक कथाएं कहती हैं कि इसी गुफा में भगवान शंकर ने माता पार्वती को अमरत्व का रहस्य सुनाया था। दो शुक (तोते) उस गूढ़ वार्ता को सुनकर अमर हो गए। आज भी भक्त गुफा में उन अमर शुकों के दर्शन को तरसते हैं। यह स्थान मात्र तीर्थ नहीं साक्षात शिव का धाम है, जहां प्रकृति स्वयं लिंगाकार हिम-स्तम्भ बनाकर महादेव की उपस्थिति का प्रमाण देती रही है सदियों से।

पर्वत, नदी, ग्लेशियर, गुफा आदि ये सब देवतुल्य हैं, सनातन इन्हें संसाधन नहीं मानता। बाबा बर्फानी का हिमलिंग जब पिघलता है तो केवल बर्फ नहीं पिघलती, हमारी अपनी मर्यादा पिघलती है। इसीलिए इस वर्ष जो हुआ, वह केवल मौसम का नहीं, सभी सनातनियों के लिए आत्मनिरीक्षण का क्षण है।

प्राकृतिक लीला: कैसे बनते हैं बाबा बर्फानी

हमारी आस्था कहती है बाबा स्वयं प्रकट होते हैं। विज्ञान कहता है- यह हिम-स्तम्भ (आइस स्टैलेगमाइट) है, जो गुफा की छत से रिसने वाली पानी की बूंदों से शीतकाल में जम-जम कर बनता है। सर्दियों में गुफा का तापमान शून्य से नीचे चला जाता है। छत से टपकती हर बूंद जमती है, परत-दर-परत और एक ऊर्ध्वाधर स्तम्भ आकार ले लेता है। भक्त इसे शिवलिंग मान पूजते हैं। वैज्ञानिक इसे स्टैलेगमाइट कहते हैं। दोनों सत्य परस्पर विरोधी नहीं, पूरक हैं, प्रकृति वही माध्यम है जिसके द्वारा देवता अपनी उपस्थिति दर्ज कराते हैं, परंतु इस बार ऐसा क्या हुआ कि केवल 5 दिन में ही बाबा बर्फानी का आकार घट गया। मौसम विज्ञानी सोनम लोटस स्पष्ट कहते हैं, कम बर्फबारी होना ही सबसे बड़ा कारण है। इस शीतकाल में अमरनाथ क्षेत्र में बर्फबारी विगत वर्षों की तुलना में अत्यंत कम रही। वर्ष 2006 में भी विशेषज्ञ एम.एन. कौल ने चेताया था कि ऊपरी जलग्रहण क्षेत्र में मात्र 5 मीटर बर्फ गिरी, जबकि पूर्व में 15-20 मीटर गिरती थी। कम बर्फ का अर्थ- कम पिघला पानी, कम जमाव और परिणामत यहां कमजोर, अल्पायु हिमलिंग का देखने को मिला। हिमालय वैश्विक औसत से दोगुनी गति से गर्म हो रहा है। जून-जुलाई में जम्मू-कश्मीर का तापमान सामान्य से 7-8 डिग्री अधिक रहा। अमरनाथ गुफा (3,888 मीटर) पर भी दिन का तापमान 10-20 डिग्री तक पहुंचा- जो हिमलिंग के संरक्षण के लिए आवश्यक शून्य से नीचे तापमान से कोसों दूर है। गुफा के आसपास के पांच ग्लेशियर 40 प्रतिशत तक सिकुड़ चुके हैं। ये ग्लेशियर ही क्षेत्र की जलवायु नियंत्रित करते हैं और गुफा तक ठंडा पिघला पानी पहुंचाते हैं। उनके सिकुड़ने का अर्थ है

पवित्र धाम की प्राकृतिक शीतलन प्रणाली का क्षीण होना। जब हम इस पवित्र परिसर में जनरेटर गड़गड़ाते हैं, लंगरों का धुआं उड़ाते हैं, हेलीकॉप्टरों से ग्लेशियरों को कम्पाते हैं, कचरा छोड़ते हैं तो हम किसी पर्यावरण को नहीं, अपने आराध्य के निवास को दूषित कर रहे होते हैं और ये सब प्रकृति से छेड़छाड़ नहीं, देवालय का अपमान है।

आपको बता दें कि प्रत्येक श्रद्धालु गुफा में लगभग 100 वाट ऊष्मा छोड़ता है। एक समय में 250 भक्तों की उपस्थिति गुफा का तापमान बढ़ा देती है। इन सब के साथ रोज लंगर का चलना, बड़े-बड़े जनरेटर और भारी मशीनों का चलना, हेलीकॉप्टर की उड़ानें, ये सब मिलकर इस पवित्र परिसर को ऊष्मा द्वीप (हीट आइलैंड) में बदल रहे हैं और तो और कचरा, प्लास्टिक, धूल ग्लेशियरों पर जमकर उनकी परावर्तक क्षमता घटाते हैं, जिससे वे अधिक गर्मी सोखते हैं।

गुफा की अपनी प्राकृतिक वेंटिलेशन प्रणाली है जो ठंडी हवा को अंदर बनाए रखती थी, ये भी निर्माण कार्यों और मानवीय गतिविधियों से बाधित हो चुकी है। आपको बता दें कि वर्ष 2023 में हिमलिंग की आयु 28 दिनों की थी, जबकि वर्ष 2024 में और वर्ष 2025 में यह 10 दिनों की थी। वही 2026 में मात्र 5 दिनों में हमलिंग का आकार बहुत घट गया। यह क्रमिक क्षय किसी मौसमी विसंगति का नहीं, स्थाई क्षेत्रीय जलवायु परिवर्तन का प्रमाण है। पिछले 3 वर्षों से यही प्रवृत्ति यात्रा आरम्भ होने के सप्ताह भर भीतर हिमलिंग का तीव्र क्षय देखा जा रहा है।

हर सनातनी भलीभांति जानते हैं कि धर्म केवल पूजा-पाठ नहीं, कर्तव्यपालन भी है। इतने बड़े और गम्भीर संकट से उबरने के उपाय कि यदि बात करें तो सबसे पहले तो हमें तीर्थ को तीर्थ ही बने रहने देना है। सनातनियों से लेकर सरकार तक सभी को यह सोचना होगा कि अगली यात्रा में संख्या पर नियंत्रण कैसे किया जाए? गुफा के अंदर उपस्थित लोगों को ज्यादा समय तक वहां रुकने न दिया जाए। इसके साथ ही किसी भी ग्लेशियर का पिघलना का मुख्य कारण वहां उपस्थित भीड़भाड़ ही नहीं है बल्कि हमारे प्रकृति से छेड़छाड़ भी है। इसके लिए हम जहां भी हैं, वहीं पर पर्यावरण के संरक्षण के उपाय कर सकते हैं। उदाहरण के तौर पर हम अपने आसपास प्लास्टिक के उपयोग को कम कर सकते हैं। कई तरह के पौधे लगा सकते हैं। नदियों को दूषित होने से बचा सकते हैं। यही हमारा धर्म है।

TJSB SAHAKARI BANK LTD.
MULTI-STATE SCHEDULED BANK
Bharose ka Bank Bhavishya ka Bank
TURN YOUR IDLE GOLD INTO INSTANT FUNDS.
THE SMARTER WAY.
LOAN UP TO ₹25 LAKHS*
INSTANT ACCESS TO FUNDS
HASSLE FREE PROCESS
MINIMAL DOCUMENTATION
SPEEDY SANCTION & DISBURSAL OF LOANS
ZERO PRE-PAYMENT CHARGES
INTEREST RATE STARTING AT
8.60%*p.a.
Your Gold Has a Story.
We Guard Every Chapter.
*T & C APPLY
www.tjsb.bank.in | : 022-48897204

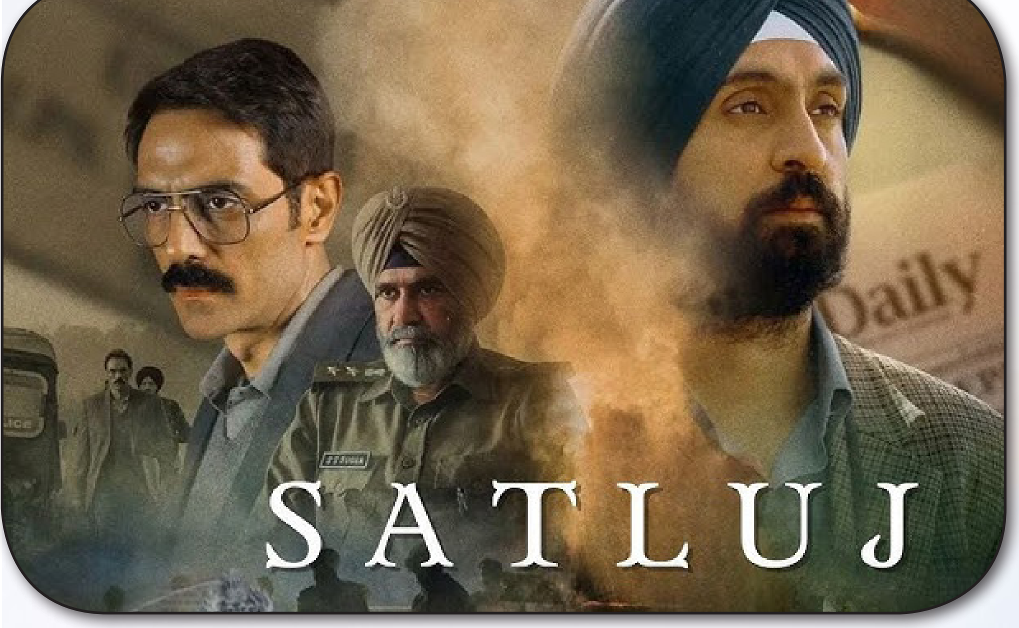

सतलुज फिल्म की एजेंडा आधारित एकतरफा प्रस्तुति अस्वीकार्य है। यदि इस फिल्म का उद्देश्य समाज में अलगाववाद व विभाजन पैदा करना है तो इसे प्रतिबंधित किया ही जाना चाहिए।

अतुल गंगवार

सतलुज पर उठते बवाल

एक बार फिर देश में सिनेमा का माध्यम चर्चा का विषय बना हुआ है। अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के नाम पर ओटीटी प्लेटफॉर्म्स पर फिल्म प्रदर्शन के ढीले नियमों के कारण एक बार फिर विवाद शुरू हो गया हैं। ताजा विवाद है फिल्म 'सतलुज' का ओटीटी पर हुआ प्रदर्शन। जी 5 पर अभी हाल ही में इस फिल्म को प्रदर्शित किया गया और प्रदर्शन के बाद हुए विवाद के चलते 2 दिन में ही फिल्म को प्लेटफॉर्म से हटा लिया गया। एक बहस सोशल मीडिया और मीडिया में शुरू हो गई कि आखिर कब तक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की आड़ में देश को आग में जलाने का प्रयास किया जाएगा?

दिलजीत दोसांझ के अभिनय से सजी, हनी त्रेहान के निर्देशन में बनी 'सतलुज' पंजाब के एक साधारण बैंककर्मी 'जसवंत सिंह खालड़ा' के जीवन पर बनी है। 'पंजाब 95' नाम से बनी ये फिल्म लगभग 3 वर्ष से सेंसर में अटकी हुई थी। विषय की संवेदनशीलता को देखते हुए सेंसर बोर्ड ने इस फिल्म को प्रदर्शन के लिए प्रमाणपत्र देने के लिए लगभग 127 कट लगाने के लिए कहा था। निर्माता-निर्देशक इसके लिए तैयार नहीं थे। मामला अटका हुआ था कि अचानक नाम (सतलुज) बदल कर ये फिल्म ओटीटी पर दिखाई जाने लगी। इसके प्रदर्शन के बाद विवाद हुआ और अचानक ये फिल्म ओटीटी से हटा ली गई।

जसवंत सिंह खालड़ा वो व्यक्ति थे, जिन्होंने पंजाब में उग्रवाद के दौरान गायब हुए लोगों को ढुढ़ने का प्रयास किया। अपने प्रयासों से उन्होंने लगभग 25000 लोगों का पता लगाया, जिन्हें उग्रवाद के दौरान लावारिस बता कर उनका अंतिम संस्कार किया गया था। खालड़ा ने इस मामले को अनेक राष्ट्रीय और अंतराष्ट्रीय मंचों पर उठाया। कहा जाता है कि तत्कालीन कांग्रेस सरकार एवं पुलिस इस पूरे मामले में घिरती दिखाई दे रही थी। अचानक एक दिन जसवंत सिंह खालड़ा गायब हो जाते हैं। माना जाता है पंजाब पुलिस ने उनका अपहरण करके उनकी भी हत्या कर दी थी। एक लम्बी कानूनी लड़ाई के बाद न्यायालय ने 18 नवम्बर 2005 में पंजाब पुलिस के 6 अधिकारियों को उनकी हत्या का दोषी ठहराया। तत्कालीन डिप्टी सुपरिटेंडेंट जसपाल सिंह और अमरजीत सिंह को आजीवन कैद की सजा सुनाई गई, जबकि चार अन्य लोगों, पूर्व सब इंस्पेक्टर सतनाम सिंह, सुरिंदर पाल सिंह, जसबीर सिंह और पूर्व हेड कांस्टेबल पृथीपाल सिंह को 7-7 वर्ष की सजा हुई, जिसे बाद में 16 अक्टूबर 2007 पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय ने निचली न्यायालय के निर्णय को बदलते हुए आजीवन कैद में बदल दिया। 11 अप्रैल

2011 को सर्वोच्च न्यायालय ने दोषियों की अपील अस्वीकार करते उच्च न्यायालय के निर्णय को सही ठहराते हुए पंजाब पुलिस के उग्रवाद के काल में किए कार्यशैली पर गम्भीर टिप्पणी की थी।

'सतलुज' के ओटीटी पर प्रदर्शन के साथ ही एक बार फिर से सारे प्रश्न उठ खड़े हुए हैं। क्या उग्रवाद के दौर में पुलिस की कार्रवाई गलत थी। पंजाब के उग्रवाद जिसने एक प्रधान मंत्री, एक मुख्य मंत्री और हजारों लोगों की बलि ले ली, उससे लड़ने का तरीका क्या सही था या होता, इस पर चर्चा शुरू हो गई। आज देश में जिस तरह का वातावरण तैयार करने का प्रयास किया जा रहा है, देश में एक बार फिर से पंजाब को अशांत करने का प्रयास हो रहा है। एक बार फिर खालिस्तान की बात हो रही है। हिंदुओं और सिखों के बीच अलगाव की भावना जगाने के प्रयास हो रहे हैं। ऐसे समय में 'सतलुज' का प्रदर्शन कहीं ना कहीं फिल्मकारों की नियत पर संदेह उत्पन्न करता है।

पंजाब में उग्रवाद का वो दौर जिन लोगों ने देखा हैं, भोगा हैं, वो आज भी उसको याद करके सिहर जाते हैं। 'सतलुज' सिनेमाई दृष्टि से इस दर्द को दिखाने में सफल रही है, लेकिन इसके आलोचक एक प्रश्न कर रहे है कि इस दर्द को केवल सिक्खों ने ही सहा था? ये दौर साक्षी है उन हजारों हिंदुओं की हत्या का जो केवल इसलिए मारे गए क्योंकि वे हिंदू थे। उनकी हत्या क्यों नहीं 'सतलुज' का हिस्सा है? क्यों नहीं जसवंत सिंह खालड़ा की कहानी के साथ उनकी भी कहानी कही गई? कदाचित् यही कारण है जिसके चलते इस फिल्म से जुड़े फिल्मकारों की नीयत पर संदेह पैदा करता है। हनी त्रेहान को इतनी तो निष्ठा रखनी चाहिए थी कि वे उग्रवाद के कारणों और उग्रवाद से प्रभावित लोगों के चित्रण भी निष्पक्ष रूप से दिखाते। किसी एक कौम को प्रताड़ित बताते हुए दूसरी कौम को हुई हानि के बारे में चुप नहीं रहते। आखिर क्या कारण होगा, जिसके कारण उन्होंने एक सत्य को अर्धसत्य में बदल दिया? क्या उनकी मंशा हिंदुओं और सिखों में दूरियों को बढ़ाने की है? निर्देशक हनी त्रेहान का मानना है कि आज के दौर में किसी अल्पसंख्यक समुदाय के व्यक्ति सिनेमा का नायक बनाकर प्रस्तुत करना आसान नहीं रह गया है। उनकी ये सोच बताती है कि उन्हें बहुसंख्यक समाज पर विश्वास नहीं है। यही कारण है उन्होंने बहुसंख्यक समाज पर हुए अत्याचारों को अपनी कहानी का हिस्सा नहीं बनाया है।

●●●

उषा शर्मा 'प्रिया'

विदेशी भाषा सीखना केवल एक अतिरिक्त योग्यता नहीं बल्कि वैश्विक नागरिक बनने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम है। यह विद्यार्थियों को रोजगार, शिक्षा, अनुसंधान, उद्यमिता तथा अंतरराष्ट्रीय सहयोग के असंख्य अवसर प्रदान करती है।

वर्तमान युग वैश्वीकरण, तकनीकी विकास और अंतरराष्ट्रीय सहयोग का युग है। आज संसार एक वैश्विक गांव बन चुका है, जहां विभिन्न देशों के लोग व्यापार, शिक्षा, विज्ञान, संस्कृति और रोजगार के माध्यम से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं। ऐसे समय में केवल मातृभाषा या अंग्रेजी का ज्ञान ही पर्याप्त नहीं रह गया है। फ्रेंच, जर्मन, जापानी, स्पेनिश, कोरियन, चीनी (मैंडरिन), रूसी तथा अरबी जैसी विदेशी भाषाओं का ज्ञान विद्यार्थियों के लिए सफलता के नए द्वार खोल रहा हैं। विदेशी भाषा सीखना केवल एक अतिरिक्त योग्यता नहीं बल्कि आधुनिक प्रतिस्पर्धी दुनिया में स्वयं को विशिष्ट बनाने का प्रभावी माध्यम बन चुका है। विदेशी भाषाएं हमें विभिन्न देशों की संस्कृति, परम्पराओं और जीवन-शैली को समझने का अवसर प्रदान करती हैं। जब हम किसी देश की भाषा सीखते हैं, तब हम केवल शब्द नहीं सीखते बल्कि उस देश की सोच, इतिहास और सांस्कृतिक मूल्यों से भी परिचित होते हैं। इससे हमारी दृष्टि व्यापक होती है तथा विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता की भावना विकसित होती हैं।

विदेशी भाषा सीखने के प्रमुख लाभ

वर्तमान समय में रोजगार के क्षेत्र में भी विदेशी भाषाओं का अत्यधिक महत्व है। बहुराष्ट्रीय कम्पनियां, पर्यटन उद्योग, दूतावास, एयरलाइंस, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, सूचना प्रौद्योगिकी, अनुवाद एवं व्याख्या सेवाएं, शिक्षा तथा मीडिया जैसे अनेक क्षेत्रों में विदेशी भाषा जानने वाले व्यक्तियों की विशेष मांग रहती है। इससे रोजगार के अवसर बढ़ते हैं और आकर्षक वेतन प्राप्त करने की सम्भावना भी अधिक होती है। विदेशी भाषाओं का अध्ययन मानसिक विकास में भी सहायक होता है। इससे स्मरण शक्ति, तार्किक क्षमता, समस्या-समाधान कौशल

वैश्विक अवसरों की नई उड़ान

तथा रचनात्मक सोच का विकास होता है। नई भाषा सीखने से मस्तिष्क अधिक सक्रिय रहता है और नई परिस्थितियों में स्वयं को ढालने की क्षमता बढ़ती है। विदेशी भाषाओं का अध्ययन मानसिक विकास में भी सहायक होता है। इससे स्मरण शक्ति, तार्किक क्षमता, समस्या-समाधान कौशल तथा रचनात्मक सोच का विकास होता है। नई भाषा सीखने से मस्तिष्क अधिक सक्रिय रहता है और नई परिस्थितियों में स्वयं को ढालने की क्षमता बढ़ती है। इन भाषाओं को सीखने के अन्य बहुत से लाभ भी हैं।

पहला लाभ रोजगार के क्षेत्र में मिलता है। आज बहुराष्ट्रीय कम्पनियां ऐसे कर्मचारियों को प्राथमिकता देती हैं जो एक से अधिक भाषाओं का ज्ञान रखते हों। विदेशी भाषा जानने वाला व्यक्ति अनुवादक, दुभाषिया, कंटेंट विशेषज्ञ, ग्राहक सेवा अधिकारी, अंतरराष्ट्रीय विपणन विशेषज्ञ, विदेशी व्यापार सलाहकार तथा पर्यटन उद्योग में उत्कृष्ट अवसर प्राप्त कर सकता है।

दूसरा महत्वपूर्ण लाभ उच्च शिक्षा के क्षेत्र में दिखाई देता है। जर्मनी, फ्रांस, जापान, दक्षिण कोरिया और स्पेन जैसे देशों के अनेक विश्वविद्यालय स्थानीय भाषा का ज्ञान रखने वाले विद्यार्थियों को प्रवेश तथा छात्रवृत्ति में विशेष अवसर प्रदान करते हैं। इससे विदेश में अध्ययन का मार्ग सरल हो जाता है।

तीसरा लाभ व्यक्तित्व विकास से जुड़ा है। नई भाषा सीखने से स्मरण शक्ति, तार्किक क्षमता, निर्णय लेने की योग्यता तथा रचनात्मक सोच का विकास होता हैं। मनोवैज्ञानिक शोध भी बताते हैं कि बहुभाषी व्यक्तियों की संज्ञानात्मक क्षमता अपेक्षाकृत अधिक विकसित होती हैं।

चौथा लाभ सांस्कृतिक समझ का है। भाषा किसी भी राष्ट्र की संस्कृति, इतिहास और जीवन-दर्शन की वाहक होती हैं। विदेशी भाषा सीखने से विभिन्न देशों की सभ्यता, साहित्य, कला और परम्पराओं को निकट से समझने का अवसर प्राप्त होता हैं, जिससे वैश्विक दृष्टिकोण विकसित होता है। भारत में वर्तमान समय में निम्नलिखित विदेशी भाषाओं की विशेष मांग है- जर्मन, फ्रेंच, जापानी, स्पेनिश, कोरियन, चीनी/मैंडरिन, रूसी, अरबी। इन भाषाओं की उपयोगिता शिक्षा, तकनीक, चिकित्सा, पर्यटन, अंतरराष्ट्रीय व्यापार, कूटनीति तथा सूचना प्रौद्योगिकी जैसे अनेक क्षेत्रों में लगातार बढ़ रही हैं।

विदेशी भाषा का कोर्स कहां से किया जा सकता है?

भारत में अनेक प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय एवं संस्थान विदेशी भाषाओं के प्रमाणपत्र , डिप्लोमा, एडवांस डिप्लोमा तथा स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर के पाठ्यक्रम संचालित करते हैं। इनमें प्रमुख हैं-

- जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, नई दिल्ली
- दिल्ली विश्वविद्यालय
- अंग्रेजी एवं विदेशी भाषा विश्वविद्यालय, हैदराबाद
- बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी
- सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय

विभिन्न राज्य विश्वविद्यालयों के भाषा विभाग

इसके अतिरिक्त अनेक देशों के सांस्कृतिक केंद्र भी भाषा प्रशिक्षण प्रदान करते हैं, जैसे फ्रेंच, जर्मन, जापानी तथा कोरियन भाषा के आधिकारिक सांस्कृतिक संस्थान। आज अनेक मान्यता प्राप्त ऑनलाइन प्लेटफॉर्म भी प्रारम्भिक एवं उन्नत स्तर के पाठ्यक्रम उपलब्ध करा रहे हैं।

कोर्स की अवधि एवं शुल्क

सामान्यतः विदेशी भाषा के प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम 6 माह से 1 वर्ष तक के होते हैं। डिप्लोमा 1 वर्ष तथा एडवांस डिप्लोमा 1-2 वर्ष का होता है। विश्वविद्यालयों में शुल्क अपेक्षाकृत कम होता है, जबकि निजी संस्थानों में भाषा एवं स्तर के अनुसार शुल्क अधिक हो सकता हैं।

कोर्स के बाद रोजगार की सम्भावनाएं

विदेशी भाषा सीखने के बाद रोजगार की सम्भावनाएं अत्यंत उज्ज्वल हैं। वर्तमान समय में सूचना प्रौद्योगिकी, ऑटोमोबाइल, पर्यटन, विमानन, होटल उद्योग, आयात-निर्यात, शिक्षा, दूतावास, मीडिया तथा अंतरराष्ट्रीय संगठनों में भाषा विशेषज्ञों की निरंतर आवश्यकता बनी रहती हैं। एक प्रशिक्षित भाषा विशेषज्ञ निम्नलिखित क्षेत्रों में कार्य कर सकता हैं- अनुवादक, दुभाषिया, विदेशी भाषा शिक्षक, कंटेंट लोकलाइजेशन विशेषज्ञ, अंतरराष्ट्रीय ग्राहक सेवा अधिकारी, पर्यटन एवं ट्रैवल गाइड, दूतावास एवं वाणिज्य दूतावास, बी.पी.ओ एवं के.पी.ओ उद्योग, अंतरराष्ट्रीय व्यापार सलाहकार, फ्रीलांस भाषा विशेषज्ञ, अनुभव एवं भाषा दक्षता के आधार पर वेतन में भी निरंतर वृद्धि होती हैं। विशेष रूप से जापानी, जर्मन, कोरियन और मैंडरिन भाषा विशेषज्ञों की उद्योगों में पर्याप्त मांग बनी हुई हैं।

विद्यार्थियों के लिए कितना लाभदायक?

उच्च शिक्षा और शोध के क्षेत्र में भी विदेशी भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान हैं। अनेक देशों के प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय विदेशी भाषा जानने वाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति एवं अध्ययन के अवसर प्रदान करते हैं। कई महत्वपूर्ण शोध-पत्र, साहित्य और वैज्ञानिक सामग्री विभिन्न भाषाओं में उपलब्ध होती हैं, जिन्हें समझने के लिए विदेशी भाषा का ज्ञान आवश्यक होता है।

नींव

भावनात्मक विकास भी आवश्यक

व्यक्ति और व्यक्तित्व का निर्माण एक दिन में नहीं होता। इसलिए आवश्यक है कि हम बच्चों को पढ़ाई के साथ-साथ मानसिक दृढ़ता और भावनात्मक संतुलन भी सिखाएं ताकि वे सामान्य और असामान्य दोनों परिस्थितियों में संतुलित रह सकें।

व्यक्ति और व्यक्तित्व का निर्माण एक दिन में नहीं होता, इसके लिए विकास की एक सतत् यात्रा करनी होती है। बच्चों को आप जैसे बचपन में शब्द का उच्चारण करना, रंगों का भेद, आकार और प्रकार समझने की प्रेरणा देते हैं, वैसे ही उन्हें मानसिक दृढ़ता या भावनात्मक रूप से मजबूत बनना सिखाएं। यह सीख उनकी दिनचर्या में शामिल होनी चाहिए। उन्हें सामान्य ही नहीं बल्कि असामान्य परिस्थितियों से भी निपटना आना चाहिए।

उन्हें 90 प्रतिशत ही नहीं, 50 प्रतिशत अंक मिलने पर भी संतुलित मनःस्थिति में रहना सिखाना चाहिए। बच्चे कभी प्रतियोगी परीक्षा की कठिन तैयारी में अपना संतुलन खोकर आत्महत्या जैसे अतिरिक्त कदम उठा लेते हैं या मानसिक रूप से विचलित हो जाते हैं। चिंता की बात तो यह है कि बच्चे आभासी परीक्षा का दबाव झेलने में भी असमर्थ हैं। हमने बच्चों को हर सुविधाएं उपलब्ध करा रखी हैं, वे केवल अनुकूल परिस्थितियों में रहने के अभ्यस्त हो गए हैं। वे प्रतिकूल परिस्थिति में असहज हो जाते हैं और

परिणीता सिन्हा 'स्वयंसिद्धा'

चूंकि हमने उन्हें जूझना नहीं सिखाया और धैर्यपूर्वक लड़ना भी नहीं सिखाया। अपने बच्चे के व्यक्तित्व को पूरी तरह उभरने और निखरने दीजिए। हमारे व्यक्तित्व में हमारी पसंद और सामाजिक व्यवहार भी शामिल हैं।

हमारी रुचियां जैसे लेखन, ड्राइंग, नृत्य, संगीत, बागवानी- ये सब मानसिक संतुलन में बड़े सहायक हैं। कभी-कभी संगीत हमारी विकट परिस्थितियों में संजीवनी की भांति काम आता हैं। कोई नृत्य करके अपने आक्रोश को भी व्यवस्थित कर लेता है तो कोई कैनवास पर अपने मनोभावों को उकेर देता हैं। कोई अपनी लेखनी में स्वयं को शब्दबद्ध कर पाता है। कोई अपने लगाए पौधों में फूल-फल आते देख उत्साहित होता हैं। जैसे भी हो, हमारा व्यवहार बहुत सीमा तक हमारे वातावरण पर निर्भर करता है। हमारे पारिवारिक आयोजन और सामाजिक सरोकार भी हमें गढ़ते हैं। हमारी संस्कृति सहिष्णुता सिखाती है और जब हम बचपन से यह सब सीखते हैं तो हमारा सर्वांगीण विकास होता है। बच्चों के भावनात्मक विकास के लिए बहुत आवश्यक है कि वे अपने अभिभावकों

से मानसिक तौर पर बिल्कुल जुड़े रहें और अच्छी तथा बुरी हर बात साझा करें। जब बातें मन के भीतर ही दबकर रह जाती हैं तभी अवसाद बढ़ता है और बच्चे किसी गलत दिशा में बढ़ जाते हैं। इन दिनों कई ऐसे समाचार पढ़ने को मिलते हैं कि आईआईटी और एम्स जैसे संस्थानों में भी छात्रों ने आत्महत्या कर ली। यह मानिए कि जो अति मेधावी छात्र थे, वे भी भावनात्मक रूप से रुग्ण थे। हमें बच्चों को केवल करियर के क्षेत्र में ही नहीं अपितु अच्छे और दृढ़ व्यक्ति बनने के लिए भी प्रेरित करना चाहिए। बच्चों में भावनात्मक स्थिरता होगी तो वे आगे चलकर अपने पारिवारिक जीवन और जिम्मेदारियों का भी अच्छी तरह निर्वहन कर पाएंगे। व्यस्त जीवनशैली के इस दौर में भौतिक सुविधाएं बढ़ गई हैं, लेकिन आत्मीयता कहीं लुप्त हो गई है। यदि हम स्वयं में सिमटे रहेंगे और बिना मतलब कुछ नहीं करेंगे तो एक दिन एकरसता की ओर ही जाएंगे। अतः आवश्यक है कि हम विभिन्न परिचर्चाओं में भाग लें और वैचारिक आदान-प्रदान करें। इसके अलावा विभिन्न स्थानों के भ्रमण और अपरिचित लोगों से मेल-मिलाप करके उनके क्रिया-कलापों से हम बच्चों को व्यवहारिक ज्ञान प्रदान कर सकते हैं। अभी हाल में विदेश से ही यह बात सामने आई कि एक विशेष आवश्यकता वाले बच्चे और उसकी मां ने अपनी असामान्य परिस्थितियों से तंग आकर अपना जीवन समाप्त कर लिया। यदि आप अपने बच्चों को कुछ संघर्षपूर्ण जीवन जीने वाले लोगों के अनुभव तथा जीवन संघर्ष दिखाएंगे तो उन्हें जीवन जीने की बहुत प्रेरणा मिलेगी। बच्चों को पढ़ने के लिए प्रोत्साहित करें क्योंकि हमारे साहित्य भी उन्हें प्रेरित करेंगे और अनगिनत सच्चे उदाहरण पढ़कर उन्हें जीवन में दिशा मिलेगी। आज के समय में मनोचिकित्सक और पारिवारिक सलाहकार भी उपलब्ध हैं, जो आपके बच्चों की मानसिक समस्या को अच्छे से समझकर उसका हल निकाल देते हैं। बच्चों को शुरू से ही कुछ मानसिक अभ्यास कराते रहिए, चाहे वह वर्ण-पहेली हो या कोई मेंटल गेम। इससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता बेहतर होगी। कई बार कुछ हार्मोनल सम्बंधी असंतुलन से भी व्यवहार में परिवर्तन आते हैं या शरीर में कुछ खास तत्वों की कमी से कुछ लक्षण परिलक्षित होते हैं तो आवश्यक है कि आपकी पैनी दृष्टि आपके बच्चों पर हो ताकि समस्या की पहचान कर उसका समय रहते समाधान करा सकें। बच्चे बिल्कुल कच्ची मिट्टी की भांति हैं और यह आप पर पूर्णतः निर्भर है कि आप उन्हें भावनात्मक रूप से कितना दृढ़ बना पाते हैं। यदि बच्चा भावनात्मक रूप से दृढ़ होगा तो वह समाज व देश-दुनिया के लिए एक नए अध्याय का शिलान्यास करेगा। ●●●

स्वयं के लिए और अपने परिजनों के लिए ग्रंथ का पंजीयन करें

इस ग्रंथ में आप पढ़ेंगे

- संघ में हो रहे अनगिनत सेवा कार्यों का परिणाम क्या है?
- डॉ. हेडगेवार जी से लेकर डॉ. मोहन भागवत जी तक के सभी सरसंघचालकों का दिशादर्शन...
- राजनीति को केंद्र में न रखकर राष्ट्रीयत्व को क्यों केंद्र में रखा?
- भारत के सम्मुख चुनौतियां और संघ कार्य का प्रभाव
- संघ विचारधारा और परिवर्तन

जैसे विविध मौलिक विषय

ग्रंथ का मूल्य ₹700/-

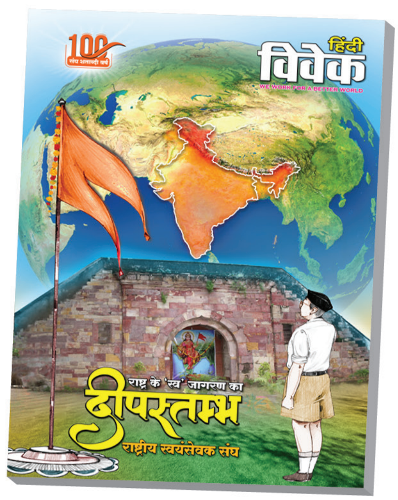

ईमेल – hindivivekvargani@gmail.com

Draft or Cheque should be drawn in the name of HINDUSTHAN PRAKASHAN SANSTHA HINDI VIVEK

Bank Details : State Bank of India, **Branch -** Charkop, A/C No. : 00000043884034193, IFSC Code : SBIN0011694

ग्रंथ पंजीकरण हेतु पत्रिका के स्थानीय प्रतिनिधि अथवा कांदिवली कार्यालय में सम्पर्क करें।

सम्पर्क प्रशांत : 9594961855, संदीप : 9082898483
भोला : 9702203252, कार्यालय : 9594991884

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करे और मैसेज बॉक्स मे अपना नाम, पता व सम्पर्क नंबर दर्ज करें।

आपकी आवाज को बुलंद करने वाली
सम्पूर्ण पारिवारिक व सामाजिक मासिक पत्रिका

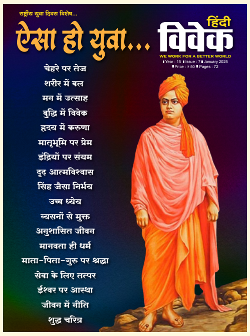

हिंदी
विवेक
" We Work For A Better World"

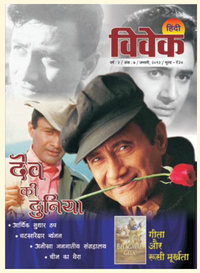

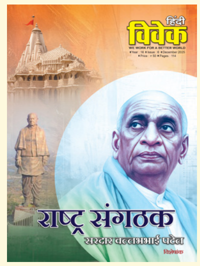

सदस्यता शुल्क

- वार्षिक मूल्य : रु. 500/-
- त्रैवार्षिक मूल्य : रु. 1,200/-
- पंचवार्षिक मूल्य : रु. 1,800/-
- संरक्षक मूल्य : रु. 25,000/-
- विदेशी सदस्यता शुल्क वार्षिक : रु. 5,000/-

खुद ग्राहक बनें व बनाएं

- जन्म दिन तथा अन्य समारोहों में हिंदी विवेक उपहार के रूप में भेंट करें।
- मित्रों, रिश्तेदारों तथा शुभचिंतकों को हिंदी विवेक की सदस्यता प्रदान करें।
- अपने दिवंगत स्नेहीजनों की स्मृति में 11, 21, 51 या 101 पाठकों को सदस्यता दें।
- विवाह के अवसर पर सदस्यता उपहार में दें।
- नववर्ष की शुभकामना के रूप में ग्रीटिंग कार्ड के स्थान पर हिंदी विवेक का सदस्यता रसीद प्रदान करें।

UPI पेमेंट गेटवे के लिए QR कोड स्कैन करें और मैसेज बॉक्स में अपना नाम, पता व सम्पर्क नम्बर दर्ज करें।

हिंदी विवेक कार्यालय

प्लॉट नम्बर 7, आरएससी रोड नम्बर 10, सेक्टर - 2, श्रीकृष्ण बिल्डिंग के पीछे,
हनुमान मंदिर बस स्टॉप के समीप, चारकोप, कांदिवली (पश्चिम), मुंबई - 400067

सम्पर्क : +91 95949 91884

hindivivekvargani@gmail.com / hindivivekadvt@gmail.com

राजीव रोहित

फीफा वर्ल्ड कप फाइनल की प्रतीक्षा

इन दिनों चल रहे फीफा वर्ल्ड कप का फाइनल कल 19 जुलाई को अमेरिका के न्यूयॉर्क स्थित न्यूजर्सी स्टेडियम में होगा। सभी खेलप्रेमियों की दृष्टि टिकी हैं कि कौन सी टीम जीतेगी फीफा का वर्ल्ड कप।

इस बार विश्व कप में हिस्सा लेनेवाली अन्य टीमों के प्रशंसकों को राहत इस बात की होगी कि पूरे टूर्नामेंट के क्वार्टर फाइनल तक किसी भी टीम ने उलटफेर नहीं किया। अंततः फीफा की 4 टॉप रैंकिंग वाली टीमें (अर्जेंटीना-प्रथम, स्पेन-द्वितीय, फ्रांस-तृतीय और इंग्लैंड-चौथी) सेमीफाइनल में पहुंचीं। पहले सेमीफाइनल में फ्रांस का मुकाबला स्पेन से हुआ जिसमें स्पेन ने 2-0 से फ्रांस को हराया और फ्रांस के सपने को चकनाचूर करते हुए फाइनल में पहुंच गया। फ्रांस 8वीं बार सेमीफाइनल खेल रहा था तो स्पेन के लिए यह दूसरा अवसर था। फ्रांस के स्टार खिलाड़ी एमबापे पर न केवल स्पेन की पूरी टीम की दृष्टि थी बल्कि पूरी दुनिया के फुटबॉल प्रेमियों की भी थीं। स्पेन अपनी रणनीति में सफल रहा। फ्रांस की टीम की ताकत काउंटर अटैक में दिखाई दी, लेकिन दबाव के अंतिम क्षणों में यह टीम बिखर गई। स्पेन के स्टार खिलाड़ी 18 साल के यामाल पर फ्रांस की दृष्टि थी, पर वे कुछ विशेष नहीं कर पाए। स्पेन के लिए मिकेल ओयारजाबाल ने पेनल्टी के जरिए पहला गोल और पेड्रो पोरो ने दूसरा गोल दागा। स्पेन ने अपनी शक्ति दिखाई कि किस तरह उसकी टीम की पासिंग पर जबरदस्त नियंत्रण है जो विरोधी टीम को पस्त कर देती है। हार-जीत के अंतर का इतिहास देखेंगे तो दोनों टीमों के बीच इस विश्व कप को मिलाकर अब 39 मैच हो चुके हैं, जिसमें स्पेन 19 बार और फ्रांस 13 बार विजयी हुआ है और 7 मैच बराबरी पर समाप्त हुए हैं। विश्व कप की बात करें तो दोनों के बीच 2006 में पहला मुकाबला हुआ था जिसमें फ्रांस ने जीत दर्ज की थी। स्पेन ने 20 साल बाद हिसाब बराबर कर लिया।

दूसरे सेमी फाइनलिस्टों की बात करें तो विश्व फीफा रैंकिंग में पहले स्थान पर अर्जेंटीना और चौथे नम्बर पर इंग्लैंड के बीच यह मुकाबला भी जबरदस्त हुआ। इससे पहले अर्जेंटीना और इंग्लैंड के बीच अब तक 14 मैच हुए थे जिसमें 6 मैच इंग्लैंड ने जीते थे और अर्जेंटीना ने 3 जीते थे। 5 मैच बराबरी पर समाप्त हुए थे। विश्व कप में भी ये दोनों 5 बार भिड़ चुके थे, जिसमें 3 मैच इंग्लैंड ने और अर्जेंटिना ने केवल 2 मैच जीते थे। इस बार की भिड़ंत में पहले हाफ में कोई गोल नहीं हुआ था। दूसरे हाफ में 55वें मिनट में इंग्लैंड के एंथनी गॉर्डन ने गोल दागकर अपनी टीम को 1-0 से बढ़त दिला दी तो इंग्लैंड के प्रशंसकों की खुशी का ठिकाना नहीं था। उन्हें ऐसा लग रहा था मानों इंग्लैंड ने विश्व कप जीत लिया हो। अर्जेंटीना ने अंतिम समय में अपनी शक्ति का, जिसके लिए पूरी दुनिया उनका लोहा मानती है, का प्रदर्शन करते हुए उसने जबर्दस्त वापसी की और 85वें मिनट में उनके एन्जो फर्नांडीज ने पहला गोल करके मैच को 1-1 की बराबरी पर ला खड़ा किया। इसके बाद ठीक 90वें मिनट में मार्टिनेज ने दूसरा शानदार गोल दागकर अर्जेंटीना को 2-1 से आगे कर दिया। इसके बाद इंग्लैंड वापसी नहीं कर सका। इस ऐतिहासिक जीत के साथ ही पूर्व चैंपियन अर्जेंटीना अब फीफा वर्ल्ड कप 2026 के फाइनल में पहुंच गया है। जहां उसका मुकाबला स्पेन से होगा। अब बस प्रतीक्षा कीजिए फुटबॉल के नए विश्व विजेता की, जिसका निर्णय 19 जुलाई को अमेरिका के न्यूयार्क स्थित न्यूजर्सी स्टेडियम में होगा।

चूड़ियों की खनखनाहट भी कुछ कहती हैं

भारत में विवाहित महिलाओं के लिए चूड़ियां मात्र आभूषण ही नहीं बल्कि वैवाहिक जीवन का सशक्त प्रतीक हैं। भारत में चूड़ी पहनने की अनूठी प्रथाएं राज्य के अनुसार अलग-अलग होती हैं।

भारतीय संस्कृति में चूड़ियां महिलाओं के जीवन का अभिन्न अंग हैं। ये महज आभूषण नहीं बल्कि वैवाहिक जीवन, सौभाग्य और पारिवारिक सुख-समृद्धि का प्रतीक मानी जाती हैं। विवाहित महिलाएं चूड़ियां पहनकर अपनी अटूट प्रतिबद्धता और पति की दीर्घायु की कामना करती हैं। चूड़ियों की खनक घर में सकारात्मक ऊर्जा भरती है। मान्यता है कि इन्हें हमेशा दोनों हाथों में पहनना चाहिए क्योंकि एक हाथ में पहनने से अशुभ माना जाता हैं। हरी या लाल रंग की कांच की चूड़ियां विशेष रूप से शुभ होती हैं।

पुरातत्वविदों ने मोहनजादड़ो और हड़प्पा के खंडहरों में चूड़ियों जैसे आभूषण खोजे हैं, जो लगभग 2600 ईसा पूर्व के हैं। इससे सिद्ध होता है कि सिंधु घाटी सभ्यता की महिलाएं भी चूड़ियां पहनती थीं। यह प्रथा हजारों वर्ष पुरानी हैं और आज भी जीवंत है।

विभिन्न राज्यों में चूड़ियों के पहनने की अनोखी परम्पराएं

पंजाब (चूड़ा और कलीरे)

पंजाबी दुल्हन विवाह के दिन लाल और सफेद रंग का चूड़ा पहनती हैं। यह चूड़ा विवाह के बाद कम से कम 40 दिनों तक नहीं उतारा जाता। चूड़े के साथ कलीरे (चांदी या सोने के लटकन) बांधे जाते हैं, जो दुल्हन की सुंदरता बढ़ाते हैं। यह परम्परा नई दुल्हन को परिवार में समाहित होने का प्रतीक मानी जाती है।

पश्चिम बंगाल (शंखा और पोला)

बंगाली विवाहित महिलाएं तीन प्रकार की चूड़ियां पहनती हैं। शंखा सफेद शंख से बनी चूड़ी होती है, जो पवित्रता का प्रतीक है। पोला लाल मूंगे की चूड़ी होती है, जबकि लोहा (लोहे का कड़ा) पति की लम्बी आयु का सूचक माना जाता है।

स्निग्धा अवतंस

महाराष्ट्र (पाटल्या और तोडे)

महाराष्ट्रीय परम्परा में हरी चूड़ियां नई शुरुआत और उर्वरता का प्रतीक हैं। इनके साथ पाटल्या (नक्काशीदार सोने की चूड़ियां) और तोडे (मोटा सोने का कड़ा) पहने जाते हैं। ये चूड़ियां महिलाओं की सौंदर्य और समृद्धि को बढ़ाती हैं। विवाह के बाद ये आभूषण दैनिक जीवन का हिस्सा बन जाते हैं।

राजस्थान और गुजरात (लाख की चूड़ियां)

इन राज्यों में चमकीले रंगों की लाख (प्राकृतिक गोंद) से बनी चूड़ियां लोकप्रिय हैं। इन पर शीशे और मोतियों का जटिल काम किया जाता है, जो इन्हें बेहद आकर्षक बनाता है। राजस्थानी और गुजराती महिलाएं इन्हें त्योहारों और विवाह समारोहों पर पहनती हैं।

चूड़ियों से जुड़ी मान्यताएं

चूड़ियां पहनने के कई नियम हैं। इन्हें उतारने पर अशुभ फल माना जाता है। यदि चूड़ी टूट जाए तो इसे शुभ संकेत समझा जाता है, लेकिन नई चूड़ियां तुरंत पहन ली जाती हैं। कई राज्यों में तो ऐसा माना जाता है कि विवाह के बाद कभी कलाई खाली नहीं रहनी चाहिए। आधुनिकता के इस युग में लोगों के तौर-तरीके बदले, रहन-सहन बदला, जीवनशैली बदली तो ऐसे में बदला चूड़ियों के रंग और डिजाईन भी। आज कई तरह की चूड़ियां बाजारों में उपलब्ध हैं। मेटल की चूड़ियां, ब्रास की चूड़ियां आदि कई तरह की चूड़ियों को देखकर महिलाएं मचल उठती हैं।

●●●

स्वास्थ्य

सूर्योदय देखना स्वस्थ जीवनशैली का सरल और प्रभावी तरीका है। प्रतिदिन सुबह उठकर सूर्य को नमस्कार करें। इससे न केवल आपका शारीरिक स्वास्थ्य बेहतर होगा बल्कि मन भी शांत और सकारात्मक रहेगा।

सूर्योदय का अंजोर

क्या आप सवेरे जल्दी उठते हैं तो आपने सूर्योदय देखा होगा, लेकिन जिन लोगों को देर से सोने की आदत होती हैं तो वे लोग सूर्योदय देखने के लाभ व अवसर से वंचित होंगे। सूर्योदय प्रकृति का वो उपहार है जो हमें कई तरह के स्वास्थ्य लाभ देता हैं। सूर्योदय देखने की आदत आपके मानसिक स्वास्थ्य के लिए बेहद लाभकारी है। सुबह की पहली किरणें न केवल आंखों को सुकून देती हैं बल्कि मस्तिष्क में सेरोटोनिन हार्मोन बढ़ाती हैं, जिससे मूड अच्छा होता है और तनाव कम होता है। साथ ही यह कोर्टिसोल हार्मोन को नियंत्रित रखता है। वैज्ञानिक रूप से सिद्ध है कि नियमित रूप से सूर्योदय देखने से नींद का चक्र सुधरता है, ऊर्जा बढ़ती है और मानसिक स्पष्टता आती हैं।

मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव

सूर्योदय देखने से तनाव और अवसाद में काफी कमी आती हैं। सुबह की प्राकृतिक रोशनी अवसाद के लक्षणों को कम करने में प्राकृतिक रूप से दवा का काम करती है। यह मस्तिष्क की आंतरिक घड़ी को रीसेट करती है, जिससे रात में गहरी और अच्छी नींद आती हैं। भोर का शांत वातावरण मानसिक थकान दूर करता है। उगता सूरज नई शुरुआत का प्रतीक है, जो सकारात्मक सोच और प्रेरणा जगाता हैं। कई मनोवैज्ञानिकों का मानना हैं कि रोज सुबह सूर्योदय देखने वाले लोग दिन भर अधिक उत्साही और सकारात्मक रहते हैं।

शारीरिक लाभ

सूर्योदय के समय मिलने वाली धूप विटामिन डी का प्राकृतिक स्रोत है, जो हड्डियों को मजबूत बनाती है और प्रतिरक्षा प्रणाली को बढ़ावा देती हैं। इससे मस्तिष्क की कार्यप्रणाली सुधरती है, स्मरणशक्ति बढ़ती है और दिन भर सतर्कता बनी रहती है।

यदि आप शहर में रहते हैं तो भी छत, बालकनी या पार्क से आसमान को निहारें। शुरुआत में 10-15 मिनट पर्याप्त हैं। धीरे-धीरे इसे आदत बनाएं। सूर्योदय देखते समय गहरी सांस लें, कुछ मिनट ध्यान केंद्रित करें और दिन की शुरुआत सकारात्मक भाव से करें। सूर्योदय और सूर्यास्त प्रकृति की सबसे सुंदर घटनाएं हैं। ये हमें याद दिलाते हैं कि चाहे जीवन कितना भी व्यस्त या नीरस क्यों न हो, सूरज सबके लिए समान रूप से उदय होता हैं। अमेरिका जैसे देशों में शहरी लोगों को प्रकृति का अनुभव करने के लिए यात्रा करनी पड़ती हैं, लेकिन सूर्योदय देखकर हम घर बैठे ही उस शांति और ऊर्जा को प्राप्त कर सकते हैं। पतझड़ और सर्दियों में आसमान में हल्के बादल होने से यह दृश्य और भी मनमोहक हो जाता हैं।

•••

महाराष्ट्र में लागू होगी 'समान नागरिक संहिता'

महाराष्ट्र के मुख्य मंत्री देवेंद्र फडणवीस ने राज्य के लिए एक समान नागरिक संहिता का मसौदा तैयार करने के लिए सर्वोच्च न्यायालय की सेवानिवृत्त न्यायाधीश रंजना देसाई की अध्यक्षता में 7 सदस्यीय समिति के गठन की घोषणा की है। उन्होंने महाराष्ट्र विधानसभा में विगत दिवस यह घोषणा की। मुख्य मंत्री ने कहा कि भारत के संविधान में निहित राज्य नीति के निर्देशक सिद्धांतों के अनुसार प्रत्येक राज्य को एक समान नागरिक संहिता लागू करने पर विचार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि इसी प्रावधान के अनुरूप राज्य सरकार ने 2026 के बजट सत्र के दौरान एक समान नागरिक संहिता को लागू करने के लिए एक समिति गठित करने की घोषणा की थी। यह समिति अगले 6 महीनों के भीतर राज्य सरकार को अपनी रिपोर्ट सौंपेगी। इस रिपोर्ट के आधार पर सरकार आगामी शीतकालीन सत्र में नागपुर में विधानसभा के दोनों सदनों के समक्ष एक समान नागरिक संहिता विधेयक पेश करने पर विचार कर रही है। प्रस्तावित कानून में धर्म की परवाह किए बिना विवाह, तलाक, विरासत और उत्तराधिकार जैसे मामलों को शामिल किए जाने की आशा हैं। न्यायमूर्ति देसाई ने इससे पहले उत्तराखंड सरकार द्वारा समान नागरिक संहिता के कार्यान्वयन के लिए गठित विशेषज्ञ समिति की अध्यक्षता की थी। उत्तराखंड स्वतंत्रता के बाद भारत में समान नागरिक संहिता लागू करने वाला पहला राज्य बना। इसके बाद गुजरात ने अपना यूसीसी कानून पारित किया, जबकि असम इस वर्ष की शुरुआत में यूसीसी कानून पारित करने वाला तीसरा राज्य बन गया है। समिति में सर्वोच्च न्यायालय की पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति रंजना देसाई और बॉम्बे उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति आर.सी. चव्हाण और न्यायमूर्ति एस.जी. मेहारे शामिल हैं। महाराष्ट्र के पूर्व मुख्य सचिव और पूर्व महाधिवक्ता, पद्मश्री पुरस्कार से सम्मानित और संविधान विशेषज्ञ रमेश पतंगे तथा शिक्षाविद और सामाजिक कार्यकर्ता सुवर्णा रावल भी इस समिति में शामिल हैं।

गांव में प्रवेश पर लगाई गई रोक

झारखंड के लोहरदगा जिले के एक गांव से धर्मांतरण का मामला प्रकाश में आया है। जिसको लेकर वहां की ग्राम सभा ने निर्णय लेकर गांव में पादरियों के प्रवेश पर रोक लगा दी है। बताया जाता है कि झारखंड के लोहरदगा जिले के हाटी गांव में ग्राम सभा ने ईसाई मिशनरियों और पादरियों के गांव में प्रवेश पर रोक लगा दी हैं। ग्रामीणों का आरोप है कि ये लोग आदिवासियों का धर्म बदलवाने (धर्मांतरण) के लिए गांव में आते हैं। हाटी गांव की ग्राम सभा ने नियम बनाया है कि अब गांव में धर्मांतरण का उद्देश्य रखने वाले पादरी और पास्टर नहीं आ सकते। यहां तक कि गांव में 'चंगाई सभा' (बीमारियों को ठीक करने के नाम पर प्रार्थना सभाएं) पर भी पूरी तरह से प्रतिबंध लगा दिया गया हैं। गांव के बाहर एक चेतावनी बोर्ड लगाया गया है जिस पर लिखा है कि पादरियों/पास्टरों का आना मना हैं। स्थानीय लोगों का मानना है कि यह केवल एक बोर्ड नहीं बल्कि उनकी संस्कृति और रीति-रिवाजों का सम्मान हैं।

उत्तराखंड में खुली पहली 'जीआई' गैलरी

हल्द्वानी की वन प्रशिक्षण अकादमी में उत्तराखंड की कृषि-जैव विविधता और सांस्कृतिक विरासत को प्रदर्शित करने के लिए राज्य की पहली 'जीआई' गैलरी स्थापित की गई है। इसमें नैनीताल की मोमबत्तियों समेत दूर-दराज क्षेत्रों के कृषि उत्पादों और हस्तशिल्पों को संरक्षित किया गया है, जो राज्य के अनोखे हिमालयी भूगोल से जुड़े हैं।

एक्सपायरी खाना व गंदा किचन दिखे तो बस आप एक फोटो खींच कर आप फसई से शिकायत कर सकते हैं। आपकी एक शिकायत कई लोगों की सहायता कर सकती हैं। यदि आपके घर एक्सपायरी सामान पहुंचा और रेस्तरां का गंदा किचन मिला या फिर 100% प्राकृतिक दावे गलत सिद्ध हुए तो केवल शिकायत नहीं अब सीधे रिपोर्ट भी कर सकते हैं। आप इनकी फोटो खींच कर इसके फूड सेफ्टी कनेक्ट ऐप व पोर्टल पर शिकायत दर्ज करें।

फोटो खींचे और शिकायत करें

रिद्धि चौहान बनीं नेवी कैडेट्स की कमांडर

भारतीय मूल की 17 वर्षीय रिद्धि चौहान ने अमेरिका में अपनी नेतृत्व क्षमता से नई पहचान बनाई है। न्यूयॉर्क के क्वींस स्थित बेंजामिन एन. कार्डोजो हाई स्कूल की छात्रा ऋद्धि को स्कूल के नेवी जूनियर रिजर्व ऑफिसर्स ट्रेनिंग कॉर्प्स का बैटालियन कमांडिंग ऑफिसर नियुक्त किया गया है। इस पद पर वह लगभग 300 कैडेट्स का नेतृत्व कर रही हैं।

रिद्धि जल्द ही नेवल अकादमी प्रिपरेटरी स्कूल में प्रशिक्षण के लिए प्रवेश लेंगी, जो आगे चलकर अमेरिका की प्रतिष्ठित यूनाइटेड स्टेट्स नेवल अकादमी में प्रवेश पाने का प्रमुख मार्ग माना जाता है।

92 वर्षीय दत्ताजी शेणोलीकर युवाओं के प्रेरणास्त्रोत

पुणे/दौंड। दत्ताजी शेणोलीकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वरिष्ठ कार्यकर्ता हैं और वर्तमान में उनकी आयु 92 वर्ष है, फिर भी सामाजिक कार्य करने की उनकी जिद्द युवाओं को प्रेरणा देने वाली हैं। इनके अथक प्रयासों से ही दौंड में सभी विद्यालयों में पेड़ लगाने का उपक्रम सफल हो सका। अपनी शारीरिक क्षमताओं की सीमाओं के बाद भी सभी शिक्षा संस्थानों के प्रमुखों से, मुख्याध्यापकों से बातचीत करके, बैठकें आयोजित करके इस वृक्षारोपण परियोजना की जानकारी दी। सभी स्थानों पर स्वयं उपस्थित रहकर इस कार्यक्रम को सफल बनाया तथा इन पौधों की वृद्धि और देखभाल की जिम्मेदारी संस्थाओं की है, ऐसा संस्था संचालकों और मुख्याध्यापकों को बताया। दत्ताजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ का कई वर्षों से कार्य कर रहे हैं। दौंड के बंगला साइड विभाग में प्रताप सायं शाखा शुरू की। नवयुवकों को संघ कार्य और विविध सेवा कार्यों में जोड़ने के लिए वे प्रयासरत रहते हैं। अनेक राष्ट्रपुरुषों की जयंती, पुण्यतिथि के अवसर पर उनके राष्ट्रकार्य की जानकारी देने का कार्य अखंड रूप से करते हैं। दत्ताजी ने रेलवे में नौकरी की। नौकरी के दौरान संघ का अविचल कार्य किया, सेवानिवृत्ति के बाद भी आज तक अखंड रूप से मार्गदर्शन कर रहे हैं। असम में उन्होंने प्रचारक के रूप में भी काम किया।

वृक्षारोपण कार्यक्रम का आयोजन

पुणे/दौंड (प्रतिनिधि)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ शताब्दी वर्ष के अवसर पर केशव माधव विश्वस्त निधी तथा कर्वेनगर स्थित सह्याद्री प्रभात शाखा की ओर से दौंड स्थित विभिन्न विद्यालयों में पंच परिवर्तन के पर्यावरण गतिविधि के अंतर्गत वृक्षारोपण कार्यक्रम आयोजित किया गया। दौंड शहर तथा आस-पास के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित ब्लॉसम इंग्लिश माध्यम विद्यालय, श्रीगुप्तेश्वर माध्यमिक आश्रमशाला, गीताबाई तात्याराव पवार आश्रमशाला सोनवडी, दीनदयाल शिक्षण संस्था के रासाईदेवी प्राथमिक आश्रमशाला वरवंड, नवयुग शिक्षण संस्था के स्व. लाजवंती भावनदास गॅरेला विद्यालय इन कुल पांच विद्यायलों के प्रांगण में जामुन, अर्जुन, प्राजक्ता , नीम, पीपल- इन देशी प्रजातियों के 50 पौधों का रोपण किया गया। इस उपक्रम में विद्यार्थी, विद्यार्थिनी तथा शिक्षकों ने उत्स्फूर्त सहभाग किया। खड्डे खोदने, पौधे लगाने, पौधों को पानी देने आदि कार्यों में उन्होंने उत्साह दिखाया। इस अवसर पर केशव माधव विश्वस्त निधि के प्रशांत कुलकर्णी, प्रकाश देशपांडे, संजय वळसंगकर, उत्तम बापू पवार, मुख्याध्यापक मकरंद पवार, शैलजा सरनोत, गुरुमुख नारंग, राजू लोखंडे, दिलीप कुदांडे, मालन दिवेकर, राजू शिर्के, बाळासाहेब वागसकर आदि उपस्थित थे। केशव माधव विश्वस्त निधी के पदाधिकारी व राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के कर्वेनगर स्थित सह्याद्री प्रभात शाखा के उल्हास सावळेकर, प्रमोद कुलकर्णी, नंदकुमार कुलकर्णी, प्रकाश देशपांडे, नरेंद्र प्रधान, योग शिक्षक सुभाष फडके, मोहन मोने, श्रीकांत पुराणिक, संजय वळसंगकर, नाना भालशंकर, चंद्रशेखर गोरे, प्रशांत कुलकर्णी ने वृक्षारोपण कार्यक्रम को सफल बनाने में योगदान दिया।

पितांबरी®
शायनिंग पाउडर
३७ सालों से
तांबा-पीतल के बर्तन
चमकाने वाला
अनमोल उपहार।
25g EXTRA
Always Shines Bright Since 1989
The Original & No.1 Brand
Pitambari®
Shining Powder
Pleasant Fragrance
More Shine for 5 Metals
COPPER ARTICLES
BRASS ARTICLES
IRON UTENSILS
ALUMINIUM UTENSILS
STEEL TAP
An ISO 9001:2015 Registered Company
स्वच्छता की पहचान
चमक का अनमोल उपहार।
Pitambari Products Pvt. Ltd.: Maharashtra: 8291853804, North: 7011012599,
South: 9886553105, East: 7752023380, 9867102999, CRM: 022 - 67035564 / 5699.
Toll Free: 18001031299 I CIN: U52291MH1989PTC051314.